प्रौढ प्राकृत-अपभ्रंश-रचना सौरभ

(भाग-2)

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

राजस्थान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रौढ प्राकृत अपभ्रंश-रचना सौरभ

(भाग-2)

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

(सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर)

प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

☐ प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी,
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी–322220 (राजस्थान)

☐ प्राप्ति–स्थान
1. **जैनविद्या संस्थान, श्री महावीरजी**
2. **साहित्य विक्रय केन्द्र**
दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी
सवाई रामसिंह रोड़
जयपुर–302 004

☐ प्रथम बार, 2002, 500

☐ मूल्य
पुस्तकालय संस्करण 100/–
विद्यार्थी संस्करण 80/–

☐ मुद्रक
मदरलैण्ड प्रिन्टिंग प्रेस
6–7, गीता भवन, आदर्श नगर
जयपुर–302 004

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

पाठ सं.	विषय	पृष्ठ सं.
	आरम्भिक व प्रकाशकीय	
1.	**क्रिया–सूत्र विवेचन (भूमिका)**	1–12
	प्राकृत के क्रिया–कृदन्त सूत्र	13–38
	शौरसेनी प्राकृत के क्रिया–कृदन्त सूत्र	39–40
	अपभ्रंश के क्रिया–कृदन्त सूत्र	41–47
2.	**क्रियारूप**	
	प्राकृत के क्रियारूप	48–62
	अपभ्रंश के क्रियारूप	63–69
परिशिष्ट–1	सूत्रों में प्रयुक्त सन्धि–नियम	(i)
परिशिष्ट–2	सूत्रों का व्याकरणिक विश्लेषण	(V)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरम्भिक व प्रकाशकीय

'प्रौढ प्राकृत–अपभ्रंश–रचना सौरभ भाग–2' अपभ्रंश अध्ययनार्थियों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

यह सर्वविदित है कि तीर्थंकर महावीर ने जनभाषा प्राकृत में उपदेश देकर सामान्यजन के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त किया। प्राकृत भाषा ही अपभ्रंश के रूप में विकसित होती हुई प्रादेशिक भाषाओं एवं हिन्दी का स्रोत बनी। अतः हिन्दी एवं अन्य सभी उत्तर भारतीय भाषाओं के इतिहास के अध्ययन के लिए प्राकृत व अपभ्रंश का अध्ययन आवश्यक है।

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित 'जैनविद्या संस्थान' के अन्तर्गत 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' जयपुर द्वारा मुख्यतः पत्राचार के माध्यम से प्राकृत व अपभ्रंश का अध्यापन किया जाता है। इसी प्राकृत व अपभ्रंश को सीखने–समझने के दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर ही 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' द्वारा 'प्रौढ अपभ्रंश रचना सौरभ भाग–1' 'प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ भाग–1' आदि पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। इसी क्रम में 'प्रौढ प्राकृत–अपभ्रंश–रचना सौरभ भाग–2' प्रकाशित है।

प्रौढ अपभ्रंश रचना सौरभ भाग–1 में अपभ्रंश के संज्ञा व सर्वनाम के सूत्रों को समझाया गया है तथा प्रौढ प्राकृत रचना सौरभ भाग–1 में प्राकृत के संज्ञा व सर्वनाम सूत्रों को समझाया गया है। प्रौढ प्राकृत–अपभ्रंश–रचना सौरभ भाग–2 में प्राकृत व अपभ्रंश के क्रिया–कृदन्तों के संस्कृत भाषा में लिखे सूत्रों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है। सूत्रों का विश्लेषण ऐसी शैली से किया गया है जिससे अध्ययनार्थी संस्कृत के अति सामान्य ज्ञान से ही उन्हें समझ सकें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्रों को पाँच सोपानों में समझाया गया है–1. सूत्रों में प्रयुक्त पदों का सन्धि–विच्छेद किया गया है, 2. सूत्रों में प्रयुक्त पदों की विभक्तियाँ लिखी गई हैं, 3. सूत्रों का शब्दार्थ लिखा गया है, 4. सूत्रों का पूरा अर्थ (प्रसंगानुसार) लिखा गया है तथा 5. सूत्रों के प्रयोग लिखे गये हैं।

आशा है कि प्रौढ प्राकृत–अपभ्रंश–रचना सौरभ भाग–2 के प्रकाशन से प्राकृत व अपभ्रंश के अध्ययन–अध्यापन को गति मिल सकेगी और 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' अपने उद्देश्य की पूर्ति में द्रुतगति से अग्रसर हो सकेगी।

पुस्तक–प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के कार्यकर्ता एवं मदरलैण्ड प्रिन्टिंग प्रेस धन्यवादार्ह हैं।

नरेन्द्र पाटनी
मंत्री

नरेशकुमार सेठी
अध्यक्ष

प्रबन्धकारिणी कमेटी
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
संयोजक
जैनविद्या संस्थान समिति

श्रेयांसनाथ मोक्ष दिवस
श्रावण शुक्ल पूर्णिमा
वीर निर्वाण संवत् 2528
22.8.2002

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ –1

क्रिया– सूत्र विवेचन

भूमिका – यह गौरव की बात है कि हेमचन्द्राचार्य ने प्राकृत की व्याकरण लिखी। उन्होंने इसकी रचना संस्कृत भाषा के माध्यम से की। प्राकृत व्याकरण को समझने के लिए संस्कृत व्याकरण की पद्धति के अनुरूप संस्कृत भाषा में सूत्र लिखे गये। किन्तु सूत्रों का आधार संस्कृत भाषा होने के कारण यह नहीं समझा जाना चाहिए कि प्राकृत व्याकरण को समझने के लिए संस्कृत के विशिष्ट ज्ञान की आवश्यकता है। संस्कृत के बहुत ही सामान्य ज्ञान से सूत्र समझे जा सकते हैं। हिन्दी, अंग्रेजी आदि किसी भी भाषा का व्याकरणात्मक ज्ञान भी प्राकृत व्याकरण को समझने में सहायक हो सकतां है।

अगले पृष्ठों में हम प्राकृत व अपभ्रंश व्याकरण के क्रिया–कृदन्त के सूत्रों का विवेचन प्रस्तुत कर रहे हैं। सूत्रों को समझने के लिए स्वर सन्धि, व्यंजनसन्धि तथा विसर्गसन्धि के सामान्य ज्ञान की आवश्यकता है।[1] साथ ही संस्कृत–प्रत्यय–संकेतों का ज्ञान भी होना चाहिए तथा उनके विभिन्न कालों, पुरुषों व वचनों के प्रत्यय–संकेतों को समझना चाहिए। इन्हीं के साथ ही संस्कृत–कृदन्तों के प्रत्यय–संकेतों को भी जानना चाहिए। काल रचना की दृष्टि से प्राकृत में वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत्काल, विधि एवं आज्ञा तथा क्रियातिपत्ति सूचक प्रयोग मिलते हैं। तीन पुरुष व दो वचन होते हैं। पुरुष–अन्य पुरुष (प्रथम पुरुष), मध्यम पुरुष व उत्तम पुरुष। वचन – एकवचन व बहुवचन। सूत्रों में विवेचित कृदन्त पाँच प्रकार के हैं– सम्बन्धक कृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया), हेत्वर्थक कृदन्त, वर्तमानकालिक कृदन्त, भूतकालिक कृदन्त एवं विधि कृदन्त। क्रिया का प्रयोग तीन प्रकार से होता है– 1. कर्तृ वाच्य, 2. कर्मवाच्य और 3. भाववाच्य। इनके भी प्रत्यय संकेत समझे जाने चाहिए। साथ ही प्रेरणार्थक क्रिया के प्रत्यय संकेतों को जानना चाहिए।

इस प्रकार क्रिया–सूत्रों को समझने के लिए निम्नलिखित प्रत्यय–ज्ञान आवश्यक है–

1. सन्धि के नियमों के लिए परिशिष्ट देखें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संस्कृत में क्रियाओं के प्रत्यय

वर्तमान काल

लट् (क)

प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

लट् (ख)

प्रथम पुरुष	ते	इत (आते)	अन्ते (अते)
मध्यम पुरुष	से	इथे (आथे)	ध्वे
उत्तम पुरुष	इ (ए)	वहे	महे

भूतकाल

सामान्य भूतकाल

लुङ् (क)

प्रथम पुरुष	त्	ताम्	उः (अन्)
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	व	म

लुङ् (ख)

प्रथम पुरुष	अत	एताम्	अन्त
मध्यम पुरुष	अथाः	एथाम्	अध्वम्
उत्तम पुरुष	ए	आवहि	आमहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनद्यतन भूतकाल

लङ् (क)

प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	व	म

लङ् (ख)

प्रथम पुरुष	त	इताम् (आताम)	अन्त (अत)
मध्यम पुरुष	थाः	इथाम् (आथाम्)	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इ	वहि	महि

परोक्ष भूतकाल

लिट् (क)

प्रथम पुरुष	अ	अतुः	उः
मध्यम पुरुष	(इ) थ	अथुः	अ
उत्तम पुरुष	अ	(इ) व	(इ) म

लिट् (ख)

प्रथम पुरुष	ए	आते	इरे
मध्यम पुरुष	(इ) से	आथे	(इ) ध्वे
उत्तम पुरुष	ए	(इ) वहे	(इ) महे

भविष्यत्काल

सामान्य भविष्य

लृट् (क)

प्रथम पुरुष	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्यावः	स्यामः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लृट् (ख)

प्रथम पुरुष	स्यते	स्येते	स्यन्ते
मध्यम पुरुष	स्यसे	स्येथे	स्यध्वे
उत्तम पुरुष	स्ये	स्यावहे	स्यामहे

अनद्यतन भविष्य

लुट् (क)

प्रथम पुरुष	ता	तारौ	तारः
मध्यम पुरुष	तासि	तास्थः	तास्थ
उत्तम पुरुष	तास्मि	तास्वः	तास्मः

लुट् (ख)

प्रथम पुरुष	ता	तारौ	तारः
मध्यम पुरुष	तासे	तासाथे	ताध्वे
उत्तम पुरुष	ताहे	तास्वहे	तास्महे

आज्ञा – विधिलिङ् – आशीर्लिङ्

आज्ञा, लोट् (क)

प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	हि	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

लोट् (ख)

प्रथम पुरुष	ताम्	इताम् (आताम्)	अन्ताम् (अताम्)
मध्यम पुरुष	स्व	इथाम् (आथाम्)	ध्वम्
उत्तम पुरुष	ऐ	आवहै	आमहै

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधिलिङ् (क)

प्रथम पुरुष	ईत्	ईताम्	ईयुः
मध्यम पुरुष	ईः	ईतम्	ईत
उत्तम पुरुष	ईयम्	ईव	ईम

अथवा (क)

प्रथम पुरुष	यात्	याताम्	युः
मध्यम पुरुष	याः	यातम्	यात
उत्तम पुरुष	याम्	याव	याम

विधिलिङ् (ख)

प्रथम पुरुष	ईत	ईयाताम्	ईरन्
मध्यम पुरुष	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
उत्तम पुरुष	ईय	ईवहि	ईमहि

आशीर्लिङ् (क)

प्रथम पुरुष	यात्	यास्ताम्	यासुः
मध्यम पुरुष	याः	यास्तम्	यास्त
उत्तम पुरुष	यासम्	यास्व	यास्म

(ख)

प्रथम पुरुष	सीष्ठ	सीयास्ताम्	सीरन्
मध्यम पुरुष	सीष्ठाः	सीयास्थाम्	सीध्वम्
उत्तम पुरुष	सीय	सीवहि	सीमहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रियातिपत्ति

लृङ् (क)

प्रथम पुरुष	स्यत्	स्यताम्	स्यन्
मध्यम पुरुष	स्यः	स्यतम्	स्यत
उत्तम पुरुष	स्यम्	स्याव	स्याम

लृङ् (ख)

प्रथम पुरुष	स्यत	स्येताम्	स्यन्त
मध्यम पुरुष	स्यथाः	स्येथाम्	स्यध्वम्
उत्तम पुरुष	स्ये	स्यावहि	स्यामहि

भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय

क्त (त → अ)

वर्तमानकालिक कृदन्त के प्रत्यय

1. शतृ (अत्)

2. शानच् (आन, मान)

सम्बन्धक कृदन्त के प्रत्यय

क्त्वा (त्वा)

हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्यय

तुमुन् (तुम्)

विधि कृदन्त के प्रत्यय

तव्य, अनीयर (अनीय)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मवाच्य और भाववाच्य के प्रत्यय

क्य = य

प्रेरणार्थक धातु बनाने के लिए प्रयुक्त प्रत्यय

णिच् (अय्)

इनमें से हलन्त शब्दों के रूप 'भूभृत्'[2] की तरह, अकारान्त शब्दों के रूप 'राम'[4] की तरह, इकारान्त के 'हरि'[1] की तरह, उकारान्त के 'गुरु'[6] की तरह, आकारान्त के 'गोपा'[3] की तरह, ईकारान्त के 'स्त्री'[5] की तरह चलेंगे। इसी प्रकार शेष शब्दों के रूपों को संस्कृत व्याकरण[8] से समझ लेना चाहिए।

सूत्रों को पाँच सोपानों में समझाया गया है–

1. सूत्रों में प्रयुक्त पदों का सन्धि विच्छेद किया गया है,
2. सूत्रों में प्रयुक्त पदों की विभक्तियाँ लिखी गई हैं,
3. सूत्रों का शब्दार्थ लिखा गया है,
4. सूत्रों का पूरा अर्थ (प्रसंगानुसार) लिखा गया है तथा
5. सूत्रों के प्रयोग लिखे गये हैं।

अगले पृष्ठों में क्रिया, कृदन्तों से सम्बन्धित सूत्र दिये गये हैं। इन सूत्रो से निम्न प्रकार के क्रियाशब्दों के रूप निर्मित हो सकेंगे–

(क) अकारान्त क्रिया – हस आदि।

(ख) आकारान्त क्रिया – ठा आदि।

(ग) ओकारान्त क्रिया – हो आदि।

सूत्रों के आधार से समस्त अकारान्त क्रियाओं के रूप 'हस' की भांति, आकारान्त क्रियाओं के रूप 'ठा' की भांति व ओकारान्त क्रियाओं के रूप 'हो' की भांति बना लेने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्रों को समझाते समय कुछ गणितीय चिह्नों का प्रयोग किया गया है, जिन्हें संकेत सूची में समझाया गया है।

---

1. हरि शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
संबोधन	हे हरे	हे हरी	हे हरयः

2. भूभृत् शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
द्वितीया	भूभृतम्	भूभृतौ	भूभृतः
तृतीया	भूभृता	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भिः
चतुर्थी	भूभृते	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
पंचमी	भूभृतः	भूभृद्भ्याम्	भूभृद्भ्यः
षष्ठी	भूभृतः	भूभृतोः	भूभृताम्
सप्तमी	भूभृति	भूभृतोः	भूभृत्सु
संबोधन	हे भूभृत्	हे भूभृतौ	हे भूभृतः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. गोपा शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गोपाः	गोपौ	गोपाः
द्वितीया	गोपाम्	गोपौ	गोपः
तृतीया	गोपा	गोपाभ्याम्	गोपाभिः
चतुर्थी	गोपे	गोपाभ्याम्	गोपाभ्यः
पंचमी	गोपः	गोपाभ्याम्	गोपाभ्यः
षष्ठी	गोपः	गोपोः	गोपाम्
सप्तमी	गोपि	गोपोः	गोपासु
संबोधन	हे गोपाः	हे गोपौ	हे गोपाः

4. राम शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
संबोधन	हे राम	हे रामौ	हे रामाः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

5. स्त्री शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम्	स्त्रियौ	स्त्रियः
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पंचमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोः	स्त्रीषु
संबोधन	हे स्त्रि	हे स्त्रियौ	हे स्त्रियः

6. गुरु शब्द

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरुन्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवे	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
पंचमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
संबोधन	हे गुरो	हे गुरू	हे गुरवः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

7. सर्व

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

8. प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी, डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेत सूची

अ = अव्यय

( ) – इस प्रकार के कोष्ठक में मूल शब्द रखा गया है।

{( ) + ( ) + ( ) ..... }

इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर + चिह्न शब्दों में संधि का द्योतक है। यहां अन्दर के कोष्ठकों में मूल शब्द ही रखे गए हैं।

{( ) – ( ) – ( ) ..... }

इस प्रकार के कोष्ठक के अन्दर '–' चिह्न समास का द्योतक है।

जहां कोष्ठक के बाहर केवल संख्या (जैसे 1/1, 2/1 ... आदि) ही लिखी है वहां उस कोष्ठक के अन्दर का शब्द 'संज्ञा' है–

1/1 – प्रथमा/एकवचन
1/2 – प्रथमा/द्विवचन
1/3 – प्रथमा/बहुवचन
2/1 – द्वितीया/एकवचन
2/2 – द्वितीया/द्विवचन
2/3 – द्वितीया/बहुवचन
3/1 – तृतीया/एकवचन
3/2 – तृतीया/द्विवचन
3/3 – तृतीया/बहुवचन
4/1 – चतुर्थी/एकवचन
4/2 – चतुर्थी/द्विवचन
4/3 – चतुर्थी/बहुवचन
5/1 – पंचमी/एकवचन
5/2 – पंचमी/द्विवचन
5/3 – पंचमी/बहुवचन
6/1 – षष्ठी/एकवचन
6/2 – षष्ठी/द्विवचन
6/3 – षष्ठी/बहुवचन
7/1 – सप्तमी/एकवचन
7/2 – सप्तमी/द्विवचन
7/3 – सप्तमी/बहुवचन
8/1 – संबोधन/एकवचन
8/2 – संबोधन/द्विवचन
8/3 – संबोधन/बहुवचन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रिया – कृदन्त–सूत्र

1. त्यादीनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ 3/139

त्यादीनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ {(ति) + (आदीनाम्) + (आद्यत्रयस्य) + (आद्यस्य) + (इच्) + (एचौ)}

{(ति) – (आदि) 6/3} आद्यत्रयस्य {(आद्य) – (त्रय) 6/1} आद्यस्य (आद्य) 6/1 {(इच्) – (एच्) 1/2}

तीन (पुरुषों) में से प्रथम (पुरुष) (अन्य पुरुष) के एकवचन के (प्रत्यय) ति आदि के स्थान पर इच् → इ और एच् → ए (होते हैं)।

वर्तमानकाल में तीन पुरुषों में से प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) के एकवचन के प्रत्यय ति आदि के स्थान पर इ और ए होते हैं। [(ति आदि) → इ,ए]

(हस + इ, ए) = **हसइ, हसए** (वर्तमान काल, प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), एकवचन)

(ठा + इ, ए) = **ठाइ** (ठाए रूप नहीं बनेगा, सूत्र – 3/145)

(हो + इ, ए) = **होइ** (होए रूप नहीं बनेगा, सूत्र – 3/145)

2. द्वितीयस्य सि से 3/140

द्वितीयस्य (द्वितीय) 6/1 सि (सि) 1/1 से (से) 1/1

द्वितीय (पुरुष के प्रत्यय) के स्थान पर सि, से (होते हैं)।

वर्तमानकाल में तीन पुरुषों में से द्वितीय पुरुष (मध्यम पुरुष) के एकवचन के प्रत्यय (सि, से) के स्थान पर सि, से होते हैं। [(सि, से) → सि, से]

(हस + सि, से) = **हससि, हससे** (वर्तमान काल, द्वितीय पुरुष (मध्यम पुरुष), एकवचन)

(ठा + सि, से) = **ठासि** (ठासे रूप नहीं बनेगा, सूत्र–3/145)

(हो + सि, से) = **होसि** (होसे रूप नहीं बनेगा, सूत्र–3/145)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. तृतीयस्य मिः 3/141

तृतीयस्य (तृतीय) 6/1 मिः (मि) 1/1

तृतीय (पुरुष के प्रत्यय) के स्थान पर मि (होता है)।

वर्तमान काल में तीन पुरुषों में से तृतीय पुरुष (उत्तम पुरुष) के एकवचन के प्रत्यय (मि, इ) के स्थान पर मि होता है। [(मि, इ) →मि]

(हस + मि) = **हसमि** (वर्तमान काल, तृतीय पुरुष (उत्तम पुरुष) एकवचन)

(ठा + मि) = **ठामि**

(हो + मि) = **होमि**

नोट : हेमचन्द्र की वृत्ति के अनुसार कहीं–कहीं अकारान्त क्रिया से परे 'मि' में स्थित 'इ' का लोप हो जाता है और म का अनुस्वार हो जाता है–

(हस + मि) = हसं (वर्तमानकाल, उत्तमपुरुष, एकवचन)

4. बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे 3/142

बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे {(बहुषु) + (आद्यस्य)} न्ति न्ते इरे

बहुषु (बहु) 7/3 आद्यस्य (आद्य) 6/1 न्ति (न्ति) 1/1 न्ते (न्ते) 1/1

इरे (इरे) 1/1

प्रथम (अन्य) पुरुष के बहुवचन में न्ति, न्ते, इरे (होते हैं)।

वर्तमानकाल में तीन पुरुषों में से प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) के बहुवचन में ('अन्ति, अन्ते के स्थान पर), न्ति, न्ते और इरे होते हैं। [(अन्ति, अन्ते) → न्ति, न्ते, इरे]

(हस +न्ति, न्ते, इरे) = **हसन्ति, हसन्ते, हसिरे** (वर्तमानकाल, प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष), बहुवचन)

(ठा + न्ति, न्ते, इरे) = ठान्ति → **ठन्ति**, ठान्ते → **ठन्ते**, **ठाइरे**

(संयुक्ताक्षर से पूर्व दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है, सूत्र – 1/84)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(हो + न्ति, न्ते, इरे) = होन्ति, होन्ते, होइरे

नोट – हेमचन्द्र की इस सूत्र की वृत्ति के अनुसार कभी– कभी अन्य पुरुष एकवचन में भी 'इरे' प्रत्यय की प्राप्ति देखी जाती है। जैसे – **सूसइरे** गाम – चिक्खल्लो।

5. मध्यमस्येत्था – हचौ 3/143

मध्यमस्येत्था – हचौ {(मध्यमस्य) + (इत्था)} हचौ

मध्यमस्य (मध्यम) 6/1 {(इत्था) – (हच्) 1/2}

मध्यमपुरुष (बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर इत्था और हच् → ह (होते हैं)।

वर्तमानकाल में तीन पुरुषों में से मध्यम पुरुष बहुवचन के प्रत्यय थ, ध्वे के स्थान पर इत्था और ह होते हैं। [(थ, ध्वे) → इत्था, ह]

(हस + इत्था, ह) = **हसित्था, हसह** (वर्तमानकाल, मध्यम पुरुष, बहुवचन)

(ठा + इत्था, ह) = **ठाइत्था, ठाह**

(हो + इत्था, ह) = **होइत्था, होह**

6. तृतीयस्य मो–मु–मा : 3/144

तृतीयस्य (तृतीय) 6/1 {(मो) – (मु) – (म) 1/3}

तृतीय पुरुष (बहुवचन के प्रत्यय) के स्थान पर मो, मु, म (होते हैं)।

वर्तमानकाल में तीन पुरुषों में से तृतीय पुरुष (उत्तम पुरुष) के बहुवचन के प्रत्यय (मः, महे) के स्थान पर मो, मु, म होते हैं। [(मः, महे) → मो, मु, म]

(हस + मो, मु, म) = **हसमो, हसमु, हसम** (वर्तमान काल, तृतीय पुरुष (उत्तम पुरुष), बहुवचन)

(ठा + मो, मु, म) = **ठामो, ठामु, ठाम**

(हो + मो, मु, म) = **होमो, होमु, होम**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

7. अत एवैच् से 3/145

अत एवैच् से {(अतः) + (एव) + (एच्)} से

अतः (अत्) 5/1 एव = ही एच् (एच्) 1/1 से (से) 1/1

अकारान्त से परे ही एच् → ए (और) से (होते हैं) (आकारान्त, ओकारान्त आदि से परे नहीं) ।

केवल अकारान्त क्रिया से परे ही ए (अन्य पुरुष एकवचन का प्रत्यय) और से (मध्यम पुरुष एकवचन का प्रत्यय) होते हैं। आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं से परे ए और से प्रत्ययों का प्रयोग नहीं किया जाता है।

(हस + ए) = **हसए** (अन्य पुरुष, एकवचन)

(ठा + ए) = **ठाए** नहीं बनेगा।

(हो + ए) = **होए** नहीं बनेगा।

(हस + से) = **हससे** (मध्यम पुरुष, एकवचन)

(ठा + से) = **ठासे** नहीं बनेगा।

(हो + से) = **होसे** नहीं बनेगा।

8. सिनास्तेः सिः 3/146

सिनास्तेः सिः {(सिना) + (अस्तेः)} सिः

सिना (सि) 3/1 अस्तेः (अस्ति) 6/1 सिः (सि) 1/1

सि (मध्यम पुरुष एकवचन के प्रत्यय) सहित अस्तित्ववाचक अस् के स्थान पर सि ही (होता है)।

अस् क्रिया के वर्तमानकाल में मध्यमपुरुष एकवचन के प्रत्यय सि परे होने पर सि सहित सि रूप ही बनेगा।

(अस् + सि) = **सि** (वर्तमानकाल, मध्यम पुरुष, एकवचन)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

9. मि-मो-मै-म्हि-म्हो-म्हा वा 3/147

मि-मो-मै-म्हि-म्हो-म्हा वा मि-मो-{(मैः) +(म्हि)}-म्हो-{(म्हाः) + (वा)}

{(मि)-(मो)-(म) 3/3} {(म्हि)-(म्हो)-(म्ह) 1/3} वा = विकल्प से मि (उत्तमपुरुष एकवचन के प्रत्यय), मो, म (उत्तमपुरुष, बहुवचन के प्रत्यय) सहित (अस् के स्थान पर) विकल्प से (क्रमशः) म्हि, म्हो, म्ह (होते हैं)।

वर्तमानकाल में उत्तमपुरुष के एकवचन के प्रत्यय मि, उत्तमपुरुष के बहुवचन के प्रत्यय मो व म सहित अस् क्रिया का क्रमशः म्हि, म्हो और म्ह होते हैं।

(अस् + मि) = **म्हि** (वर्तमानकाल, उत्तम पुरुष, एकवचन)

(अस् + मो) = **म्हो** (वर्तमानकाल, उत्तम पुरुष, बहुवचन)

(अस् + म) = **म्ह** (वर्तमानकाल, उत्तम पुरुष, बहुवचन)

10. अत्थिस्त्यादिना 3/148

अत्थिस्त्यादिना {(अत्थिः) + (ति) + (आदिना)}

अत्थिः (अत्थि) 1/1 {(ति) – (आदि) 3/1}

(वर्तमानकाल के तीनों पुरुषों व दोनों वचनो में) ति आदि सहित ('अस्') अत्थि (होता है)।

अस् क्रिया के वर्तमानकाल के तीनों पुरुषों व दोनों वचनों में ति आदि सहित अत्थि होता है।

(अस् + ति आदि) = **अत्थि** (वर्तमान काल के तीनों पुरुषों व दोनों वचनों में)

अस (वर्तमानकाल)

	एकवचन	बहुवचन
उ. पु.	**अत्थि**	**अत्थि**
म. पु.	**अत्थि**	**अत्थि**
अ. पु	**अत्थि**	**अत्थि**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

11. णेरदेदावावे 3/149

णेरदेदावावे {(णेः) + (अत्) + (एत्) + (आव) + (आवे)}

णेः (णि) 6/1 {(अत्) – (एत्) – (आव) – (आवे) 1/1}

णि (प्रेरणार्थक प्रत्यय) के स्थान पर अत् → अ, एत् → ए, आव (और) आवे (होते हैं)।

किसी भी क्रिया को प्रेरणार्थक बनाने के लिए उसमें अ, ए, आव, आवे प्रत्यय जोड़े जाते हैं। [(णि) → अ, ए, आव, आवे]

(हस+अ,ए, आव, आवे) = **हास, हासे, हसाव, हसावे**

(सूत्र 3/153 से अ व ए प्रत्यय लगने पर आदि 'अ' का 'आ' हुआ है)

12. गुर्वादेरविर्वा 3/150

गुर्वादेरविर्वा {(गुरु) + (आदेः) + (अविः) + (वा)}

{(गुरु) + (आदि) 6/1}[1] अविः (अवि) 1/1 वा = विकल्प से

आदि (स्वर) में गुरु (दीर्घ) होने पर विकल्प से अवि (होता है)[2]।

आदि (स्वर) में गुरु (दीर्घ) होने पर प्रेरणार्थक प्रत्यय (णि) के स्थान पर विकल्प से अवि होता है।[2]

रूस + अवि = **रूसवि** (रुसाना)

रूस, रूसे, रूसाव, रूसावे (सूत्र – 3/149)

13. भ्रमे राडो वा 3/151

भ्रमे राडो वा {(भ्रमेः) + (आडः) + (वा)}

---

1. यहाँ पर षष्ठी का प्रयोग सप्तमी के अर्थ में हुआ है।
2. इस सूत्र की हेमचन्द्र की व्याख्या के अनुसार आदि स्वर गुरुवाली धातुओं में किसी भी प्रकार के प्रेरणार्थक प्रत्यय को नहीं जोड़ करके भी प्रेरणार्थक अर्थ प्रदर्शित कर दिया जाता है। जैसे –सोसिअं =सुखाया हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रमेः (भ्रमि) 5/1 आडः (आड) 1/1 वा = विकल्प से

भ्रमि → भ्रम→भम से परे (प्रेरणार्थक प्रत्यय णि के स्थान पर) विकल्प से आड (होता है) [(णि) → आड]

भम से परे प्रेरणार्थक प्रत्यय णि के स्थान पर विकल्प से आड होता है।

(भम + आड) = **भमाड**

14. लुगावी – क्त – भाव – कर्मसु 3/152

लुगावी –क्त–भाव–कर्मसु {(लुक्) + (आवी)} –क्त–भाव–कर्मसु

{(लुक्) –(आवि) 1/2} {(क्त)–(भाव)–(कर्म) 7/3}

क्त्→त→अ (भूतकालिक कृदन्त का प्रत्यय), भाववाच्य (और) कर्मवाच्य (के प्रत्यय) परे होने पर (प्रेरणार्थक प्रत्यय के स्थान पर) लोप ('0' प्रत्यय) (और) आवि (प्रत्यय लगेंगे)।

क्त→त→अ (भूतकालिक कृदन्त का प्रत्यय)', भाववाच्य और कर्मवाच्य के प्रत्यय (इज्ज, ईअ) परे होने पर प्रेरणार्थक प्रत्यय के स्थान पर लोप ('0' प्रत्यय) और आवि प्रत्यय लगेंगे। [(त)→ अ; (य)→ इज्ज, ईअ; (णि)→ 0, आवि]

भूतकालिक कृदन्त

(हस + '0' + अ) = (हास +अ) = **हासिअ** (सूत्र 3/153 से आदि 'अ' का 'आ' हुआ है।)

(हस + आवि + अ) = (हसावि +अ) = **हसाविअ**

कर्मवाच्य

(कर + 0 + इज्ज, ईअ) = (कार + इज्ज, ईअ) = **कारिज्ज**, **कारीअ** (सूत्र 3/153 से आदि 'अ' का 'आ' हुआ है)

(कर + आवि + इज्ज, ईअ) = (करावि + इज्ज, ईअ) = **कराविज्ज, करावीअ**

भाववाच्य

(हस + 0 + इज्ज, ईअ) = (हास+इज्ज, ईअ) = **हासिज्ज, हासीअ**

(हस + आवि + इज्ज, ईअ) = (हसावि + इज्ज, ईअ) = **हसाविज्ज, हसावीअ**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

15. अदेल्लुक्यादेरत आः 3/153

अदेल्लुक्यादेरत आः {(अत्) + (एत्) + (लुकि) + (आदेः) + (अतः) + (आः)}

{(अत्) – (एत्) – (लुक्) 7/1} आदेः (आदि) 6/1 अतः(अत्) 6/1 आः (आ) 1/1

(प्रेरणार्थक प्रत्ययों में से) अत्→ अ, एत् → ए, लोप ('0') प्रत्यय परे होने पर

आदि अत् → अ का आ (होता है)।

प्रेरणार्थक प्रत्ययों में से अ, ए, '0' प्रत्यय परे होने पर आदि अत् → अ का अ होता है।

(हस + अ) = हस → **हास**

(हस + ए) = हसे → **हासे**

(हस + '0') = हस → **हास**

नोट – इस सूत्र की व्याख्या के अनुसार कुछ व्याकरणकार आवे और आवि प्रत्ययों का सद्भाव होने पर भी आदि 'अ' का 'आ' होना स्वीकार करते हैं जैसे –करावे → कारावे, करावि → कारावि।

16. मौ वा 3/154

मौ (मि) 7/1 वा = विकल्प से

मि परे होने पर (अन्त्य 'अ' का) विकल्प से (आ होता है)।

अकारान्त क्रियाओं से परे मि होने पर अन्त्य 'अ' का विकल्प से 'आ' होता है।

(हस+मि) = हसमि, **हसामि** (वर्तमान काल, उत्तम पुरुष, एकवचन)

(देखें सूत्र – 3/141)

17. इच्च मो–मु–मे वा 3/155

इच्च मो–मु–मे वा {(इत्) + (च)}

इत् (इत्) 1/1 च = और {(मो) – (मु) – (म) 7/1} वा= विकल्प से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मो, मु, म (उत्तम पुरुष बहुवचन क प्रत्यय) परे होने पर (क्रिया के अन्त्य अ का) विकल्प से इत् → इ और (आ होता है)।

अकारान्त क्रियाओं से परे उत्तम पुरुष, बहुवचन के प्रत्यय मो, मु, म होने पर क्रिया के अन्त्य 'अ' का विकल्प से 'इ' और 'आ' होता है।

(हस + मो, मु, म) = **हसामो, हसामु, हसाम** (वर्तमान काल, उत्तम पुरुष, बहुवचन)
हसिमो, हसिमु, हसिम

18. क्ते 3/156

क्ते (क्त) 7/1

क्त → त → **अ** परे होने पर (अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है)।

त → अ (भूतकालिक कृदन्त का प्रत्यय) परे होने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है।

(हस+अ) = **हसिअ** (भूतकालिक कृदन्त)

19. एच्च क्त्वा – तुम् – तव्य – भविष्यत्सु 3/157

एच्च क्त्वा – तुम् –तव्य – भविष्यत्सु {(एत्) + (च)} क्त्वा – तुम् – तव्य – भविष्यत्सु

एत् (एत्) 1/1 च = और {(क्त्वा) – (तुम्) – (तव्य) – (भविष्यत्) 7/3}

क्त्वा → त्वा (सम्बन्धक भूतकृदन्त के प्रत्यय), तुम् (हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्यय), तव्य (विधि कृदन्त के प्रत्यय) तथा भविष्यत्काल – बोधक प्रत्यय परे होने पर (अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का) 'ए' और ('इ' होता है)।

(त्वा) → उं, अ, ऊण, उआण (सम्बन्धक भूतकृदन्त के प्रत्यय), (तुम्) → उं (हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्यय,), (तव्य) → अव्व (विधिकृदन्त के प्रत्यय) तथा भविष्यत्काल– बोधक (स्यति, स्यते आदि→हि आदि) प्रत्यय परे होने पर अकारान्त क्रिया के अन्त में स्थित 'अ' का 'ए' और 'इ' होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(हस + उं, अ, ऊण, उआण) = **हसिउं, हसिअ, हसिऊण, हसिउआण, हसेउं, हसेअ, हसेऊण, हसेउआण**

(सम्बन्धक भूतकृदन्त) (देखें सूत्र –2/146)

(हस + इय, दूण, त्ता) = **हसिय, हसिदूण, हसित्ता**[1] (सं. कृ. शौरसेनी प्राकृत)

(देखें सूत्र – 4/271)

(हस + उं) = **हसिउं, हसेउं** (हे. कृ.)

(हस + अव्व) = **हसिअव्व, हसेअव्व** (वि. कृ.)

भविष्यत्काल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसिहिमि, हसेहिमि, हसिहामि, हसेहामि हसिस्सामि, हसेस्सामि, हसिस्सं, हसेस्सं, हसिस्सिमि[2] (देखें सूत्र – 3/166–167, 3/169, 3/275)	हसिहिमो, हसेहिमो, हसिहिमु हसेहिमु, हसिहिम, हसेहिम हसिस्सामो, हसेस्सामो हसिस्सामु, हसेस्सामु, हसिस्साम हसेस्साम, हसिहामो, हसेहामो हसिहामु, हसेहामु, हसिहाम हसेहाम, हसिहिस्सा, हसेहिस्सा हसिहित्था, हसेहित्था, हसिस्सिमो

---

1. व्याकरण के नियमानुसार हसेत्ता व हसेदूण रूप भी बनने चाहिए परन्तु हेमचन्द्र की इस सूत्र की वृत्ति में इन रूपों का उल्लेख नहीं है।
2. शौरसेनी प्राकृत का भविष्यत्काल बोधक प्रत्यय 'स्सि' लगने पर क्रिया के अन्त्य अ का सिर्फ 'इ' होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		हसिस्सिमु, हसिस्सिम (देखें सूत्र – 3/166–168, 4/275)
मध्यमपुरुष	हसिहिसि, हसेहिसि, हसिहिसे, हसेहिसे, हसिस्सिसि, हसिस्सिसे (देखें सूत्र – 3/166, 4/275) हसिस्ससि, हसेस्ससि, हसिस्ससे, हसेस्ससे[1]	हसिहिह, हसेहिह, हसिहित्था, हसेहित्था, हसिस्सिह, हसिस्सिइत्था, हसिस्सिध (देखें सूत्र – 3/166, 4/268, 4/275) हसिस्सह, हसेस्सह, हसिस्सइत्था, हसेस्सइत्था, हसिस्सध, हसेस्सध[1]
अन्यपुरुष	हसिहिइ, हसेहिइ, हसिहिए, हसेहिए, हसिस्सिदि, हसिस्सिदे (देखें सूत्र –3/166, 4/273, 4/275) हसिस्सइ, हसेस्सइ, हसिस्सए, हसेस्सए[1]	हसिहिन्ति, हसेहिन्ति, हसिहिन्ते, हसेहिन्ते, हसिहिइरे, हसेहिइरे हसिस्सिन्ति, हसिस्सिन्ते, हसिस्सिइरे (देखें सूत्र – 3/166, 4/275) हसिस्सन्ति, हसेस्सन्ति, हसिस्सन्ते, हसेस्सन्ते, हसिस्सइरे, हसेस्सइरे[1]

1. भविष्यत्काल के मध्यम पुरुष एकवचन, बहुवचन तथा अन्य पुरुष एकवचन, बहुवचन में 'स्स' प्रत्यय भी क्रिया में जोड़ा जाता है। इस प्रत्यय को जोड़ने के बाद वर्तमानकाल के पुरुषवाचक प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं। पिशल, प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पृष्ठ – 758।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

20. वर्तमाना–पंचमी–शतृषु वा 3/158

{(वर्तमाना) – (पंचमी) – (शतृ) 7/3} वा = विकल्प से

(अकारान्त क्रियाओं में) वर्तमानकाल (के पुरुषवाचक प्रत्यय), पंचमी (आज्ञार्थक, विधि – अर्थक पुरुषवाचक प्रत्यय) तथा शतृ (वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय) परे होने पर विकल्प से (क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'ए' होता है)।

वर्तमानकाल के पुरुषवाचक प्रत्यय, आज्ञार्थक या विधि – अर्थक पुरुषवाचक प्रत्यय तथा वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय परे रहने पर अकारान्त क्रियाओं के अन्त्य 'अ' का विकल्प से 'ए' होता है।

वर्तमानकाल

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तमपुरुष	हसमि, हसेमि (सूत्र– 3/141)	हसमो, हसमु, हसम, हसेमो, हसेमु, हसेम (सूत्र – 3/144)
मध्यमपुरुष	हससि, हससे, हसेसि, हसेसे (सूत्र – 3/140)	हसह, हसित्था, हसध, हसेह, हसेइत्था, हसेध (सूत्र – 3/143, 4/268)
अन्यपुरुष	हसइ, हसदि, हसेइ, हसेदि (सूत्र– 3/139, 4/273)	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे हसेन्ति, हसेन्ते, हसेइरे (सूत्र – 3/142)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधि एवं आज्ञा

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसमु, हसेमु (सूत्र– 3/173)	हसमो, हसेमो (सत्र – 3/176)
मध्यमपुरुष	हससु, हसहि, हसेसु, हसेहि (सूत्र – 3/173–174)	हसह, हसेह (सूत्र – 3/176)
अन्यपुरुष	हसउ, हसेउ (सूत्र – 3/173)	हसन्तु, हसेन्तु (सूत्र – 3/176)

वर्तमान कृदन्त

हसन्त, हसमाण

हसेन्त, हसेमाण (सूत्र – 3/181)

21. ज्जा – ज्जे 3/159

{(ज्जा) – (ज्ज) 7/1}

ज्जा और ज्ज (प्रत्यय) परे होने पर (क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'ए' होता है)। वर्तमानकाल, भविष्यत्काल, आज्ञार्थक व विध्यर्थक के सभी प्रकार के पुरुषवाचक प्रत्ययों के स्थान पर प्राप्त होनेवाले ज्जा व ज्ज प्रत्यय के परे रहने पर अकारान्त क्रियाओं के अन्त्य 'अ' के स्थान पर 'ए' की प्राप्ति होती है। (देखें सूत्र – 3/177)

22. ईअ – इज्जौ क्यस्य 3/160

{(ईअ) – (इज्ज) 1/2} क्यस्य (क्य) 6/1

क्य (य) = (कर्मवाच्य और भाववाच्य के प्रत्यय) के स्थान पर ईअ और इज्ज (होते हैं)। [(य) → ईअ, इज्ज]

य (कर्मवाच्य और भाववाच्य के प्रत्यय) के स्थान पर ईअ और इज्ज होते हैं। ये प्रत्यय क्रिया व कालबोधक प्रत्यय के बीच लगाये जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(हस + इज्ज /ईअ) = **हसिज्जइ /हसीअइ** (वर्तमानकाल का भाववाच्य)
(कर + इज्ज /ईअ) = **करिज्जइ / करीअइ** (वर्तमानकाल का कर्मवाच्य)
नोट – हेमचन्द की वृत्ति के अनुसार कभी–कभी 'ईअ व इज्ज' की प्राप्ति के बिना भी कर्मवाच्य – भाववाच्य के रूप बन जाते हैं। जैसे – मए नवेज्ज या मए नविज्जेज्ज (मुझसे नमा जाता है।)

23. सी ही हीअ भूतार्थस्य 3/162

सी ही हीअ भूतार्थस्य सी ही {(हीअः) + (भूतार्थस्य)}
सी (सी) 1/1 ही (ही) 1/1 हीअ : (हीअ) 1/1 भूतार्थस्य (भूतार्थ) 6/1 (अकारान्त क्रियाओं के अतिरिक्त (स्वरान्त) आकारान्त, ओकारान्त क्रियाओं से परे) भूतार्थबोधक प्रत्ययों (त्, अत आदि) के स्थान पर (तीनों पुरुषों व दोनों वचनों में) सी, ही और हीअ (होते हैं) ।
अकारान्त क्रियाओं के अतिरिक्त आकारान्त, ओकारान्त क्रियाओं से परे भूतार्थ बोधक प्रत्ययों (त्, अत आदि) के स्थान पर तीनों पुरुषों व दोनो वचनों में सी, ही और हीअ होते हैं। [(त्, अत आदि) → सी, ही, हीअ]

भूतकाल (ठा)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ
मध्यमपुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ
अन्यपुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ

भूतकाल (हो)

उत्तमपुरुष	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ
मध्यमपुरुष	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ
अन्यपुरुष	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

24. व्यञ्जनादीअः 3/163

व्यञ्जनादीअः {(व्यञ्जनात्) + (ईअः)}

व्यञ्जनात् (व्यञ्जन) 5/1 ईअः (ईअ) 1/1

व्यञ्जनान्त (अकारान्त) क्रियाओं से परे (भूतार्थबोधक प्रत्ययों) (त्, अत आदि) (के स्थान पर) ईअ (होता है)।

अकारान्त क्रियाओं से परे भूतार्थबोधक प्रत्ययों (त्, अत आदि) के स्थान पर तीनों पुरुषों व दोनों वचनों में 'ईअ' प्रत्यय होता है। [(त्, अत आदि) → ईअ]

भूतकाल (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसीअ	हसीअ
मध्यमपुरुष	हसीअ	हसीअ
अन्यपुरुष	हसीअ	हसीअ

25. तेनास्तेरास्यहेसी 3/164

तेनास्तेरास्यहेसी {(तेन) + (अस्तेः) + (आसि) + (अहेसी)}

तेन (त) 3/1 अस्तेः (अस्ति) 6/1 आसि (आसि) 1/1 अहेसी (अहेसी) 1/1 (तीनों पुरुषों व दोनों वचनों में) उसके सहित (अर्थात् भूतार्थबोधक प्रत्ययों सहित) अस्तित्ववाचक →अस् के स्थान पर आसि और अहेसी होते हैं।

भूतार्थबोधक प्रत्ययों के साथ अस् के स्थान पर तीनों पुरुषों व दोनों वचनों में आसि और अहेसी होते हैं। [(अस् + त्, अत आदि)→ आसि, अहेसी]

अस (भूतकाल)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	आसि, अहेसी	आसि, अहेसी
मध्यमपुरुष	आसि, अहेसी	आसि, अहेसी
अन्यपुरुष	आसि, अहेसी	आसि, अहेसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

26. ज्जात्सप्तम्या इर्वा 3/165

ज्जात्सप्तम्या इर्वा {(ज्जात्) + (सप्तम्याः) + (इः) + (वा)}

ज्जात् (ज्ज) 5/1 सप्तम्याः (सप्तमी) 5/1 इः (इ) 1/1 वा = विकल्प से (क्रिया से परे) सप्तमी अर्थक (विधिअर्थक प्रत्यय) ज्ज से परे विकल्प से 'इ' (होता है)।

विधि (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसेज्जइ	हसेज्जइ
मध्यमपुरुष	हसेज्जइ	हसेज्जइ
अन्यपुरुष	हसेज्जइ	हसेज्जइ

(सूत्र– 3/158 से क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'ए' हुआ है)

विधि (ठा)

उत्तमपुरुष	ठज्जइ	ठज्जइ
मध्यमपुरुष	ठज्जइ	ठज्जइ
अन्यपुरुष	ठज्जइ	ठज्जइ

(सूत्र– 1/84 के अनुसार संयुक्ताक्षर से पूर्व दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है।)

विधि (हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	होज्जइ	होज्जइ
मध्यमपुरुष	होज्जइ	होज्जइ
अन्यपुरुष	होज्जइ	होज्जइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

27. भविष्यति हिरादिः 3/166

भविष्यति हिरादिः भविष्यति {(हिः) + (आदिः)}

भविष्यति (भविष्यत्) 7/1 हिः (हि) 1/1 आदिः (आदि) 1/1 वि

भविष्यत् काल में (क्रिया से परे) सर्वप्रथम 'हि' (जोड़ा जाता है)। भविष्यत्काल में क्रिया से परे भविष्यअर्थक प्रत्यय स्यति, स्यते आदि के स्थान पर सर्वप्रथम 'हि' प्रत्यय जोड़ा जाता है, तत्पश्चात् वर्तमानकाल के पुरुषबोधक व वचनबोधक प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं।

(रूपावली के लिए देखें सूत्र – 3/157)

28. मि–मो–मु–मे स्सा हा न वा 3/167

{(मि) – (मो) – (मु) – (म) 7/1} स्सा (स्सा) 1/1 हा (हा) 1/1

न वा = विकल्प से

(क्रिया से परे) मि (वर्तमानकाल, उत्तम पुरुष एकवचन का प्रत्यय), मो, मु, म (उ. पु. बहु. के प्रत्यय) होने पर (भविष्यत्काल में) विकल्प से स्सा, हा (होते हैं)। भविष्यत्काल में क्रिया से परे मि, मो, मु, म होने पर उनके पूर्व विकल्प से 'स्सा' और 'हा' होते हैं।

(रूपावली के लिए देखें सूत्र– 3/157)

29. मो–मु–मानां हिस्सा हित्था 3/168

मो–मु–मानां हिस्सा हित्था भो– मु – {(मानाम्) + (हिस्सा)} हित्था

{(मो) – (मु) – (म) 6/3} हिस्सा (हिस्सा) 1/1 हित्था (हित्था) 1/1

मो, मु, म के स्थान पर (विकल्प से) हिस्सा, हित्था (होते हैं)।

भविष्यत्काल में क्रिया से परे हिमो, हिमु, हिम (सूत्र 3/157), स्सामो, स्सामु, स्साम, हामो, हामु, हाम (सूत्र 3/157) के स्थान पर विकल्प से 'हिस्सा' और 'हित्था' जोड़े जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(हस + हिस्सा, हित्था) = **हसिहिस्सा, हसिहित्था,**
हसेहिस्सा, हसेहित्था,
(भविष्यत्काल, उत्तमपुरुष, बहुवचन)

(नोट – सूत्र 3/157 से अन्त्य अ का 'इ' व 'ए' हुआ है)

30. मेः स्सं 3/169

मेः (मि) 6/1 स्सं (स्सं) 1/1

मि के स्थान पर (विकल्प से) स्सं (होता है)।

भविष्यत्काल में क्रिया से परे हिमि (सूत्र 3/157), स्सामि, हामि (सूत्र 3/157) के स्थान पर विकल्प से 'स्सं' प्रत्यय जोड़ा जाता है।

(हस + स्सं) = **हसिस्सं, हसेस्सं**

(भविष्यत्काल, उत्तम पुरुष, एकवचन)

31. दु सु मु विध्यादिष्वेकस्मिंस्त्रयाणाम् 3/173

दु सु मु विध्यादिष्वेकस्मिंस्त्रयाणाम् दु सु मु {(विधि) + (आदिषु) + (एकस्मिन्) + (त्रयाणाम्)}

दु (दु) 1/1 सु (सु) 1/1 मु(मु) 1/1 {(विधि) + (आदि) 7/3} एकस्मिन् (एक) 7/1 त्रयाणाम् (त्रय) 6/3

विधि आदि में तीनों ('पुरुषों' अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष) के एकवचन में (क्रमशः) दु → उ, सु, मु (होते हैं)।

विधि, आज्ञा एवं आशीषबोधक प्रत्ययों (तु, ताम् आदि) के स्थान पर अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष के एकवचन में क्रमशः उ, सु, मु होते हैं। {(तु,ताम् आदि) → उ, सु, मु}

(हस+उ) = **हसउ, हसेउ** (विधि, अन्य पुरुष, एकवचन)

(हस+सु) = **हससु, हसेसु** (विधि, म. पु. एकवचन)

(हस+मु) = **हसमु, हसेमु** (विधि, उ. पु. एकवचन)

(सूत्र 3/158 से तीनों पुरुषों में अन्त्य 'अ' का 'ए' हुआ है)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

32. सोर्हिवा 3/174

सोर्हिवा [(सोः) + (हिः)] वा

सोः (सु) 6/1 हिः (हि) 1/1 वा = विकल्प से

सु (मध्यम पुरुष, एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से हि (भी) (होता है)।

विधि, आज्ञा एवं आशीष अर्थ में 'सु' (मध्यम पुरुष, एकवचन के प्रत्यय के स्थान पर) विकल्प से 'हि' भी होता है।

(हस+सु) = (हस + हि) = **हसहि, हसेहि** (विधि, मध्यम पुरुष, एकवचन)

(सूत्र 3/158 से अन्त्य 'अ' का 'ए' हुआ है)

33. अत इज्जस्विज्जहीज्जे – लुको वा 3/175

अत इज्जस्विज्जहीज्जे – लुको वा [(अतः) + (इज्जसु) + (इज्जहि) - (इज्जे) + (लुकः) + (वा)]

अतः (अत्) 5/1 [(इज्जसु) - (इज्जहि) – (इज्जे) – (लुक्) 1/3]

वा = विकल्पसे

(विधि आदि में) अकारान्त क्रियाओं से परे (म. पु. एकवचन के प्रत्यय सु के स्थान पर) विकल्प से इज्जसु, इज्जहि, इज्जे व लोप ('0' प्रत्यय) (होते हैं)।

विधि, आज्ञा एवं आशीष अर्थ में अकारान्त क्रियाओं से परे सु (मध्यम पुरुष, एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से इज्जसु, इज्जहि, इज्जे व लोप ('0' प्रत्यय) होते हैं।

(हस + सु) = (हस + इज्जसु, इज्जहि, इज्जे, '0' प्रत्यय) = **हसेज्जसु,**
हसेज्जहि,
हसेज्जे, हस
(विधि, मध्यम पुरुष, एकवचन)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

34. बहुषु न्तु ह मो 3/176

बहुषु न्तु ह मो बहुषु न्तु {(हः) + (मो)}

बहुषु (बहु) 7/3 न्तु (न्तु) 1/1 हः (ह) 1/1 मो (मो) 1/1

(विधि आदि के प्रत्ययों के स्थान पर) (तीनों पुरुषों के) बहुवचन में (क्रमशः) न्तु, ह, मो (होते हैं)।

विधि, आज्ञा एवं आशीष बोधक प्रत्ययों (अन्तु, अन्ताम् आदि) के स्थान पर अन्य पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष के बहुवचन में क्रमशः न्तु, ह, मो होते हैं।

{(अन्तु, अन्ताम् आदि) → न्तु, ह, मो}

(हस + न्तु) = **हसन्तु, हसेन्तु** (विधि, अन्य पु. बहु.)

(हस + ह) = **हसह, हसेह** (विधि, म. पु. बहु)

(हस + मो) = **हसमो, हसेमो** (विधि, उ. पु. बहु.)

(सूत्र 3/158 से तीनों पुरुषों में अन्त्य 'अ' का 'ए' हुआ है)

35. वर्तमाना – भविष्यन्त्योश्च ज्ज ज्जा वा 3/177

वर्तमाना – भविष्यन्त्योश्च ज्ज ज्जा वा {(वर्तमाना) + (भविष्यन्त्योः) + (च)} {(ज्जः) + (ज्जा)} वा

{(वर्तमाना) – (भविष्यन्ति) 7/2} च = और ज्जः (ज्ज) 1/1 ज्जा (ज्जा) 1/1

वा = विकल्प से

वर्तमान, भविष्यत्काल और (विधि में) (तीनों पुरुषों व दोनों वचनों के प्रत्ययों के स्थान पर) विकल्प से ज्ज (और) ज्जा (होते हैं)।

वर्तमानकाल, भविष्यत्काल और विधि आदि में तीनों पुरुषोंव दोनों वचनों के प्रत्ययों के स्थान पर विकल्प से ज्ज और ज्जा होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा
मध्यमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा
अन्यपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा

विधि एवं आज्ञा

उत्तमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा
मध्यमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा
अन्यपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज हसेज्जा

भविष्यत्काल

उत्तमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा
मध्यमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा
अन्यपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा

(सूत्र 3/159 से अकारान्त क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'ए' हुआ है)

(हो + ज्ज, ज्जा) = **होज्ज, होज्जा**

(ठा + ज्ज, ज्जा) = ठाज्ज → **ठज्ज,** ठाज्जा → **ठज्जा**

आकारान्त, ओकारान्त क्रियाओं के इसी प्रकार तीनों काल, तीनों पुरुष व दोनों वचनों के रूप बना लेने चाहिए।

36. मध्ये च स्वरान्ताद्वा 3/178

मध्ये च स्वरान्ताद्वा मध्ये च {(स्वरान्तात्) + (वा)}

मध्ये (मध्य) 7/1 च = और स्वरान्तात् (स्वरान्त) 5/1 वा = विकल्प से स्वरान्त (अकारान्त के अतिरिक्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं) से

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परे (वर्तमान, भविष्यत् व विधिबोधक प्रत्ययों के) मध्य में विकल्प से (ज्ज, ज्जा प्रत्यय जुड़ते हैं)।

अकारान्त के अतिरिक्त आकारान्त, ओकारान्त आदि स्वरान्त क्रियाओं से परे वर्तमानकाल, भविष्यत्काल व विधि आदि के प्रत्ययों के मध्य में विकल्प से ज्ज, ज्जा प्रत्यय होते हैं।

वर्तमानकाल (हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	होज्जमि, होज्जामि	होज्जमो, होज्जामो, होज्जमु, होज्जामु, होज्जम, होज्जाम
मध्यमपुरुष	होज्जसि, होज्जासि, होज्जसे, होज्जासे	होज्जइत्था/होज्जित्था, होज्जाइत्था, होज्जह, होज्जाह
अन्यपुरुष	होज्जइ, होज्जाइ, होज्जए, होज्जाए,	होज्जन्ति, होज्जान्ति, होज्जन्ते, होज्जान्ते होज्जइरे, होज्जाइरे

विधि एवं आज्ञा (हो)

उत्तमपुरुष	होज्जमु, होज्जामु	होज्जमो, होज्जामो
मध्यमपुरुष	होज्जहि, होज्जाहि, होज्जसु, होज्जासु	होज्जह, होज्जाह
अन्यपुरुष	होज्जउ, होज्जाउ	होज्जन्तु, होज्जान्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल (हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	होज्जहिमि, होज्जाहिमि,	होज्जहिमो, होज्जाहिमो,
	होज्जस्सामि, होज्जास्सामि	होज्जहिमु, होज्जाहिमु,
	होज्जहामि, होज्जाहामि,	होज्जहिम, होज्जाहिम,
	होज्जस्सिमि, होज्जास्सिमि	होज्जस्सामो, होज्जास्सामो,
		होज्जस्सामु, होज्जास्सामु,
		होज्जस्साम, होज्जास्साम,
		होज्जस्सिमो, होज्जास्सिमो,
		होज्जस्सिमु, होज्जास्सिमु
		होज्जस्सिम, होज्जास्सिम
		होज्जहामो, होज्जाहामो,
		होज्जहामु, होज्जाहामु,
		होज्जहाम, होज्जाहाम
मध्यमपुरुष	होज्जहिसि, होज्जाहिसि	होज्जहिह, होज्जाहिह,
	होज्जहिसे, होज्जाहिसे	होज्जहिध, होज्जाहिध
		होज्जहित्था, होज्जाहित्था
अन्यपुरुष	होज्जहिइ, होज्जाहिइ,	होज्जहिन्ति, होज्जाहिन्ति
	होज्जहिए, होज्जाहिए,	होज्जहिन्ते, होज्जाहिन्ते,
	होज्जस्सिदि, होज्जास्सिदि	होज्जइरे, होज्जाइरे,
		होज्जस्सिन्ति, होज्जास्सिन्ति
		होज्जस्सिन्ते, होज्जास्सिन्ते
		होज्जस्सिइरे, होज्जास्सिइरे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

37. क्रियातिपत्तेः 3/179

क्रियातिपत्तेः (क्रियातिपत्ति) 6/1

क्रियातिपत्ति (स्यत्, स्यत आदि) के स्थान पर (तीनों पुरुषों व दोनों वचनों में ज्ज, ज्जा प्रत्यय होते हैं)।

क्रियातिपत्ति (यदि ऐसा होता तो ऐसा हो जाता) के स्थान पर तीनों पुरुषों व दोनों वचनों में ज्ज, ज्जा प्रत्ययों की प्राप्ति हो जाती है।

{(स्यत् , स्यत आदि) → ज्ज, ज्जा}

क्रियातिपत्ति

	एकवचन	**बहुवचन**
उत्तमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा
मध्यमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा
अन्यपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा	हसेज्ज, हसेज्जा

(सूत्र 3/159 से अन्त्य 'अ' के स्थान पर 'ए' हुआ है)

38. न्त – माणौ[1] 3/180

{(न्त) – (माण) 1/2}

(क्रियातिपत्ति के स्थान पर) न्त और माण (होते हैं)।

क्रियातिपत्ति के स्थान पर न्त और माण क्रिया में जुड़ते हैं। बेचरदास दोशी के अनुसार प्रथमा विभक्ति में इनका प्रयोग होता है। {(स्यत्, स्यत आदि) → न्तो, माणो, न्तं, माणं, न्ती, माणी आदि}

	एकवचन	बहुवचन
पुल्लिंग	हसन्तो, हसमाणो,	हसन्ता, हसमाणा
नपुंसकलिंग	हसन्तं, हसमाणं,	हसन्ताइं, हसमाणाइं
स्त्रीलिंग	हसन्ती, हसमाणी,	हसन्तीओ, हसमाणीओ,
	हसन्ता, हसमाणा	हसन्ताओ, हसमाणाओ

हेमचन्द्र की वृत्ति – क्रियातिपत्तेः स्थाने न्तमाणौ आदेशो भवतः। होन्तो, होमाणो। अभविष्यदित्यर्थः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रियातिपत्ति

हस

	एक वचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसन्तो, हसन्ती	हसन्ता, हसन्तीओ,
मध्यमपुरुष	हसन्तो, हसन्ती	हसन्ता, हसन्तीओ,
अन्यपुरुष	हसन्तो, हसन्तं	हसन्ता, हसन्ताइं
	हसन्ती	हसन्तीओ

इसी प्रकार हसमाण के रूप चलेंगे।

39. शत्रानशः 3/181

शत्रानशः {(शतृ) + (आनशः) }

{(शतृ) – (आनश्) 6/1}

शतृ (अत्) और आनश् (आन या मान) के स्थान पर (न्त और माण) (होते हैं)। शतृ और आनश् (वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय) के स्थान पर न्त और माण होते हैं। इनमें संज्ञाओं के समान ही विभक्ति बोधक प्रत्ययों की संयोजना की जाती है। ये विशेषण की भांति कार्य करते हैं। {(अत्) → न्त, (आन या मान) → माण}

(हस + न्त, माण) = **हसन्त, हसमाण**

हँसता हुआ राजा = **हसन्तो नरिन्दो (पुल्लिंग)**

खिलता हुआ कमल = **विअसन्तं कमलं (नपुंसकलिंग)**

हँसती हुई महिला = **हसन्ता महिला (स्त्रीलिंग)**

40. ई च स्त्रियाम् 3/182

ई (ई) 1/1 च = और स्त्रियाम् (स्त्री) 7/1

स्त्रीलिंग में (वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों के स्थान पर) ई और न्ता, माणा, न्ती माणी होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमान कृदन्त के प्रत्ययों के स्थान पर स्त्रीलिंग में ई और न्ता, माणा, न्ती, माणी होते हैं।

हँसती हुई = **हसन्ता, हसमाणा, हसई, हसन्ती, हसमाणी**

(सूत्र 3/32 के अनुसार स्त्रीलिंग बनाने के लिए 'ई' और 'आ' प्रत्ययों का प्रयोग होता है इसीलिए हसन्ती, हसमाणी, हसन्ता, हसमाणा रूप बने हैं।)

41. क्त्वस्तुमत्तूण – तुआणाः 2/146

क्त्वस्तुमत्तूण – तुआणाः {(क्त्वः) + (तुम्) + (अत्) + (तूण) – (तुआणाः)}

क्त्वः (क्त्वा) 6/1 {(तुम्) – (अत्) – (तूण) – (तुआण) 1/3}

क्त्वा के स्थान पर तुं → उं, अत् → अ, तूण → ऊण, तुआण → उआण (होते हैं)।

क्त्वा (संबंधक भूत कृदन्त के प्रत्यय) के स्थान पर उं, अ, ऊण, उआण होते हैं।

(हस + उं) = **हसिउं, हसेउं**

(हस + अ) = **हसिअ, हसेअ**

(हस + ऊण) = **हसिऊण, हसेऊण, हसिऊणं, हसेऊणं**

(हस + उआण) = **हसिउआण, हसेउआण, हसिउआणं, हसेउआणं**

नोट – सूत्र संख्या 3/157 से अन्त्य 'अ' के स्थान पर 'इ' व 'ए' हुआ है एवं सूत्र 1/27 से ऊण व उआण प्रत्ययों पर विकल्प से अनुस्वार की प्राप्ति हुई है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शौरसेनी प्राकृत के क्रिया — कृदन्त सूत्र

42. इह – हचोर्हस्य 4/268

इह – हचोर्हस्य इह – {(हचोः) + (हस्य)}

{(इह) – (हच्) 6/2} हस्य (ह) 6/1

इह और हच् के ह का (विकल्प से ध हो जाता है)।

इह (अव्यय) और हच् → ह (वर्तमानकाल, मध्यम पुरुष, बहुवचन का प्रत्यय) के ह का (शौरसेनी प्राकृत में) विकल्प से ध हो जाता है।

इह → **इध** (यहाँ पर)

हसह → **हसध** (वर्तमानकाल, मध्यमपुरुष, बहुवचन)

43. क्त्व इय – दूणौ 4/271

क्त्व इय – दूणौ {(क्त्वः) + (इय)} – दूणौ

क्त्वः (क्त्वा) 6/1 {(इय) – (दूण) 1/2 }

क्त्वा →त्वा के स्थान पर (विकल्प से) इय और दूण (होते हैं)।

क्त्वा →त्वा (संबंधक कृदन्त के प्रत्यय) के स्थान पर (शौरसेनी प्राकृत में) विकल्प से इय और दूण होते हैं। वैकल्पिक पक्ष होने से त्ता प्रत्यय भी होता है।

(क्त्वा) → इय, दूण, त्ता

(हस + इय, दूण,त्ता) = **हसिय, हसिदूण, हसित्ता** (सं. कृ.)

44. दिरिचेचोः 4/273

दिरिचेचोः {(दिः) + (इच्) + (एचोः)}

दिः (दि) 1/1 {(इच्) – (एच्) 6/2}

इच् → इ एच्→ ए के स्थान पर दि (की प्राप्ति होती है)।

इ, ए (वर्तमान काल, अन्य पुरुष एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर शौरसेनी में 'दि' प्रत्यय की प्राप्ति होती है।

(हस + इ, ए) = (हस + दि) = **हसदि** (वर्तमानकाल, अन्यपुरुष, एकवचन)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

45. अतो देश्च 4/274

अतो देश्च {(अतः) + (देः) + (च)}

अतः (अत्) 5/1 देः (दे) 1/1 च = और

अकारान्त से परे (इ, ए के स्थान पर) दे और (दि होते हैं)।

अकारान्त क्रियाओं से परे इ, ए (अन्य पुरुष एकवचन के प्रत्यय) के स्थान पर दि और दे होते हैं। अकारान्त के अतिरिक्त आकारान्त, ओकारान्त क्रियाओं में केवल 'दि' प्रत्यय की प्राप्ति होती है 'दे' की नहीं।

(हस + इ, ए) = (हस + दे, दि) = **हसदे, हसदि** (वर्तमानकाल, अन्य पुरुष, एकवचन)

46. भविष्यति स्सिः 4/275

भविष्यति (भविष्यत्) 7/1 स्सिः (स्सि) 1/1

(शौरसेनी प्राकृत में) भविष्यत्काल में (क्रिया में) स्सि (प्रत्यय जोड़ा जाता है फिर वर्तमानकाल के प्रत्यय जोड़े जाते हैं)।

शौरसेनी प्राकृत में भविष्यत्काल में क्रिया में स्सि प्रत्यय जोड़ा जाता है। तत्पश्चात् वर्तमानकाल के पुरुषबोधक व वचनबोधक प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं।

(हस + स्सि + दि, दे)	=	**हसिस्सिदि, हसिस्सिदे** (भवि. अन्य पुरुष, एकवचन)
(हस + स्सि + न्ति, न्ते, इरे)	=	**हसिस्सिन्ति, हसिस्सिन्ते, हसिस्सिइरे** (भवि, अ. बहु.)
(हस + स्सि + सि, से)	=	**हसिस्सिसि, हसिस्सिसे** (भवि. म. एक.)
(हस + स्सि + ह, इत्था, ध)	=	**हसिस्सिह, हसिस्सिइत्था, हसिस्सिध** (भवि. म. बहु.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(हस + स्सि + मि) = **हसिस्सिमि** (भवि. उ. एक.)

(हस + स्सि + मो, मु, म) = **हसिस्सिमो, हसिस्सिमु, हसिस्सिम** (भवि. उ. बहु.)

अपभ्रंश के क्रिया–कृदन्त सूत्र –

47. त्यादेराद्य–त्रयस्य बहुत्वे हिं न वा 4/382

त्यादेराद्य – त्रयस्य बहुत्वे हिं न वा {(ति) + (आदेः) + (आद्य) – (त्रयस्य)} {(ति) – (आदि) 6/1} आद्यत्रयस्य (आद्यत्रय) 6/1 बहुत्वे (बहुत्व) 7/1 हिं (हिं) 1/1 न वा = विकल्प से

ति आदि के स्थान पर तीन पुरुषों में से प्रथम पुरुष के बहुवचन में (अन्ति, अन्ते प्रत्ययों के स्थान पर) विकल्प से हिं (होता है)।

वर्तमानकाल में ति आदि के स्थान पर तीन पुरुषों में से प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) के बहुवचन में अन्ति, अन्ते प्रत्ययों के स्थान पर विकल्प से हिं होता है। {(अन्ति, अन्ते) → हिं}

(हस + हिं) = **हसहिं** (वर्तमानकाल, प्रथम पुरुष (अन्य पुरुष) बहुवचन)

वैकल्पिक पक्ष – **हसन्ति, हसन्ते, हसिरे** (सूत्र – 3/142)

48. मध्य–त्रयस्याद्यस्य हिः 4/383

मध्य–त्रयस्याद्यस्य हिः {(मध्य)–(त्रयस्य) + (आद्यस्य)} हिः {(मध्य) – (त्रय) 6/1} आद्यस्य (आद्य) 6/1 हिः (हि) 1/1

तीन पुरुषों में से मध्यम पुरुष के एकवचन के (प्रत्यय सि आदि के) स्थान पर हि (होता है)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकाल में तीन पुरुषों में से मध्यम पुरुष के एकवचन के प्रत्यय (सि आदि) के स्थान पर हि होता है। {(सि आदि) → हि}

(हस + हि) = **हसहि** (वर्तमानकाल, मध्यमपुरुष, एकवचन)

वैकल्पिक पक्ष – **हससि, हससे** (सूत्र – 3/140)

49. बहुत्वे हुः 4/384

बहुत्वे (बहुत्व) 7/1 हुः (हु) 1/1

(तीन पुरुषों में से) (मध्यमपुरुष के) बहुवचन में (विकल्प से) हु (होता है)।

वर्तमान काल में तीन पुरुषों में से (मध्यमपुरुष के) बहुवचन में विकल्प से हु होता है।

वर्तमान काल में तीन पुरुषों में से मध्यमपुरुष के बहुवचन में (थ, ध्वे के स्थान पर) विकल्प से हु होता है। {(थ, ध्वे) → हु}

(हस + हु) = **हसहु** (वर्तमानकाल, मध्यमपुरुष, बहुवचन)

वैकल्पिक पक्ष – **हसह, हसित्था** (सूत्र – 3/143)

50. अन्त्य – त्रयस्याद्यस्य उं 4/385

अन्त्य – त्रयस्याद्यस्य उं {(अन्त्य) – (त्रयस्य) + (आद्यस्य)} उं

{(अन्त्य) – (त्रय) 6/1} आद्यस्य (आद्य) 6/1 उं (उं) 1/1

(तीन पुरुषों में से) अन्तिम तीसरे पुरुष के एकवचन के (प्रत्यय के) स्थान पर (विकल्प से) उं (होता है)।

तीन पुरुषों में से अन्तिम तीसरे पुरुष के (उत्तम पुरुष) के एकवचन के (मि, इ) प्रत्ययों के स्थान पर विकल्प से उं (होता है)। {(मि, इ) → उं}

(हस + उं) = **हसउं** (वर्तमानकाल, उत्तमपुरुष, एकवचन)

वैकल्पिक पक्ष – **हसमि, हसामि, हसेमि**। (सूत्र – 3/141, 3/154, 3/158)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

51. बहुत्वे हुं 4/386

बहुत्वे (बहुत्व) 7/1 हुं (हुं) 1/1

(तीन पुरुषों में से) (उत्तमपुरुष के) बहुवचन में (विकल्प से) हुं (होता है)।

तीन पुरुषों में से उत्तम पुरुष के बहुवचन के प्रत्यय (मः, महे) के स्थान पर विकल्प से हुं (होता है)। {(मः, महे) → हुं}

(हस + हुं) = **हसहुं** (वर्तमानकाल, उत्तमपुरुष, बहुवचन)

वैकल्पिक पक्ष – **हसमो, हसमु, हसम**। (सूत्र – 3/144)

52. हि – स्वयोरिदुदेत् 4/387

हि – स्वयोरिदुदेत् {(स्वयोः) + (इत्) + (उत्) + (एत्)}

{(हि) – (स्व) 6/2} इत् (इत्) 1/1 उत् (उत्) 1/1 एत् (एत्) 1/1

(विधि एवं आज्ञा के) (मध्यमपुरुष एकवचन के) हि और स्व (प्रत्ययों) के स्थान पर (विकल्प से) इत् → इ, उत् → उ, एत् → ए (होते हैं)।

विधि एवं आज्ञा में मध्यमपुरुष एकवचन में हि और स्व प्रत्ययों के स्थान पर विकल्प से इ, उ और ए होते हैं। {(हि, स्व) → इ,उ, ए}

(हस + हि, स्व) = (हस + इ, उ, ए) = **हसि, हसु, हसे** (विधि एवं आज्ञा, मध्यमपुरुष, एकवचन)

वैकल्पिक पक्ष – **हसहि, हससु, हस**। (सूत्र – 3/173,174)

53. वत्सर्यति–स्यस्य सः 4/388

वत्सर्यति (वत्सर्यत्) 7/1 स्यस्य (स्य) 6/1 सः (स) 1/1

भविष्यत्काल में स्य (भविष्यत्काल के प्रत्यय) के स्थान पर विकल्प से स होता है। (तत्पश्चात् वर्तमानकाल के पुरुषबोधक व वचनबोधक प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं)। {(स्य) → स} और अकारान्त क्रिया के अन्त्य अ का इ और ए हो जाता है। (सूत्र–3/157)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(हस+स+इ, ए) = **हसिसइ, हसेसइ, हसिसए, हसेसए** (भविष्यत्काल, अन्य पुरुष, एकवचन)

(हस + स + हिं) = **हसिसहिं, हसेसहिं** (भविष्यत्काल, अन्यपुरुष बहुवचन)

(हस + स + हि) = **हसिसहि, हसेसहि** (भविष्यत्काल, मध्यमपुरुष एकवचन)

(हस + स + हु) = **हसिसहु, हसेसहु** (भविष्यत्काल, मध्यमपुरुष, बहुवचन)

(हस + स + उं) = **हसिसउं, हसेसउं** (भविष्यत्काल, उत्तमपुरुष एकवचन)

(हस + स + हुं) = **हसिसहुं, हसेसहुं** (भविष्यत्काल, उत्तमपुरुष, बहुवचन)

वैकल्पिक पक्ष – **हसिहिइ, हसिहिए, हसेहिइ, हसेहिए,** (भवि. अ. पु. एक)
हसिहिन्ति, हसिहिन्ते, हसिहिइरे
हसेहिन्ति, हसेहिन्ते, हसेहिइरे (भवि. अ. पु. बहु.)
हसिहिसि, हसिहिसे, हसेहिसि, हसेहिसे
(भवि. म.पु एक.)
हसिहिह, हसिहित्था, हसेहिह, हसेहित्था
(भवि. म.पु.बहु.)
हसिहिमि, हसेहिमि (भवि. उ. पु. एक.)
हसिहिमो, हसिहिमु, हसिहिम,
हसेहिमो, हसेहिमु, हसेहिम (भवि. उ.पु.बहु.)
(सूत्र–3/157)

54. तव्यस्य इएव्वउं एव्वउं एवा 4/438

तव्यस्य (तव्य) 6/1 इएव्वउं (इएव्वउं) 1/1 एव्वउं (एव्वउं) 1/1 एवा (एवा) 1/1 तव्य के स्थान पर इएव्वउं, एव्वउं और एवा होते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तव्य (चाहिए अर्थ) के स्थान पर इएव्वउं, एव्वउं और एवा होते हैं।

{(तव्य) → इएव्वउं, एव्वउं, एवा}

(कर + इएव्वउं, एव्वउं, एवा) = **करिएव्वउं, करेव्वउं, करेवा** (विधि कृदन्त)

55. क्त्व इ–इउ–इवि–अवयः 4/439

क्त्व इ–इउ–इवि–अवयः {(क्त्वः) + (इ)}

क्त्वः (क्त्वा) 6/1 {(इ) – (इउ)–(इवि)–(अवि) 1/3}

क्त्वा के स्थान पर इ, इउ, इवि, अवि (होते हैं)।

क्त्वा (संबंधक कृदन्त के प्रत्यय) के स्थान पर इ, इउ, इवि और अवि होते हैं।

{(क्त्वा) → इ, इउ, इवि, अवि}

(कर + इ, इउ, इवि, अवि) – **करि, करिउ, करिवि, करवि** (संबंधक कृदन्त)

56. एप्पेप्पिण्वेव्येविणवः 4/440

एप्पेप्पिण्वेव्येविणवः {(एप्पि) + (एप्पिणु) +(एवि) + (एविणवः)}

{(एप्पि) – (एप्पिणु) – (एवि) – (एविणु) 1/3}

(क्त्वा के स्थान पर) एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु (होते हैं)।

क्त्वा (संबंधक कृदन्त के प्रत्यय) के स्थान पर एप्पि, एप्पिणु, एवि और एविणु होते हैं। {(क्त्वा) → एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु}

(कर + एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु) = **करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु** (संबंधक कृदन्त)

57. तुम एवमणाणहमणहिं च 4/441

तुम एवमणाणहमणहिं च {(तुमः) + (एवम्) + (अण) + (अणहम्) + (अणहिं)}च

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुमः (तुम्) 6/1 एवम् (एवम्) 1/1 अण (अण) 1/1 अणहम् (अणहम्) 1/1 अणहिं (अणहिं) 1/1 च = और

तुम् → तुं के स्थान पर एवं, अण, अणहं, अणहिं और (एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु होते हैं)

तुं (हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्यय) के स्थान पर एवं, अण, अणहं, अणहिं और एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु होते हैं। {(तुं) → एवं, अण, अणहं, अणहिं, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु}

(कर + एवं, अण, अणहं, अणहिं, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु)

= **करेवं, करण,**
करणहं, करणहिं,
करेप्पि, करेप्पिणु,
करेवि, करेविणु (हेत्वर्थक कृदन्त)

58. गमेरेप्पिण्वेप्प्योरेर्लुग् वा 4/442

गमेरेप्पिण्वेप्प्योरेर्लुग् वा {(गमेः) + (एप्पिणु) + (एप्प्योः) + (एः) +(लुक्)+ (वा)}

गमेः (गमि) 5/1 {(एप्पिणु) – (एप्पि) 7/2 } एः (ए) 6/1 लुक् (लुक्) 1/1 वा= विकल्प से

गमि → गम्[1] धातु से परे एप्पिणु, एप्पि प्रत्यय होने पर विकल्प से (प्रत्ययों के आदि स्वर) ए का लोप होता है।

गमि → गम् से परे एप्पिणु, एप्पि प्रत्यय होने पर विकल्प से इन प्रत्ययों के (आदि स्वर) ए का लोप हो जाता है।

गम् + एप्पिणु = **गम्पिणु, गमेप्पिणु**

गम् + एप्पि = **गम्पि, गमेप्पि** (संबंधक कृदन्त)

1. गमि→गम् के लिए देखें, संस्कृत अंग्रेजी कोश, मोनियर विलियम, पृष्ठ–348।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

59. स्वरादनतो वा 4/240

स्वरादनतो वा {(स्वरात्) + (अन्) + (अतः) + (वा)}

स्वरात् (स्वर) 5/1 अन् (अ) = नहीं अतः (अत्) 5/1 वा= विकल्प से

स्वर से परे (धातु के अन्त में) विकल्प से (अ, विकरण लगता है।) अकारान्त से परे नहीं।

अकारान्त को छोड़कर अन्य स्वरवाली (धातु) से परे अन्त में विकल्प से विकरण 'अ' लगता है।

जैसे– ठा → **ठाइ या ठाअइ**

झा → **झाइ या झाअइ**

नोट – 1. पूर्व सूत्रानुसार (4/239) व्यञ्जनान्त धातुओं के अन्त में 'अ' विकरण लगता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ – 2

प्राकृत के क्रियारूप

वर्तमान काल

अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसमि (3/141), हसामि (3/154), हसेमि (3/158), हसं (3/141 की वृत्ति), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177, 3/159)	हसमो, हसमु, हसम, (3/144) हसामो, हसामु, हसाम, हसिमो, हसिमु, हसिम (3/155), हसेमो, हसेमु, हसेम (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177, 3/159),
मध्यम पुरुष	हससि, हससे (3/140), हसेसि, हसेसे (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177, 3/159)	हसह, हसित्था, हसध (3/143, 4/268), हसेह, हसेइत्था, हसेध (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177, 3/159),
अन्य पुरुष	हसइ, हसए (3/139), हसदि, हसदे (4/273, 4/274), हसेइ, हसेदि (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177, 3/159)	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे (3/142), हसेन्ति, हसेन्ते, हसेइरे (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177, 3/159)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकाल

अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मि (3/141,3/154,3/158), ∴ (3/141 की वृत्ति), ज्ज, ज्जा (3/177,3/159)	मो, मु, म (3/144,3/155,3/158), ज्ज, ज्जा (3/177, 3/159)
मध्यम पुरुष	सि, से (3/140, 3/158) ज्ज, ज्जा (3/177, 159)	ह, इत्था, ध (3/143, 3/158,4/268), ज्ज, ज्जा, (3/177, 159),
अन्य पुरुष	इ, ए (3/139) दि, दे (4/273, 4/274, 3/158), ज्ज, ज्जा (3/177, 3/159)	न्ति, न्ते, इरे (3/142, 3/158), ज्ज, ज्जा (3/177, 159)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमान
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (ठा, हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ठामि (3/141), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177, 1/84), ठाज्जमि,ठाज्जामि (3/178, 3/141, 1/84)	ठामो, ठामु, ठाम (3/144), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जमो, ठाज्जमु, ठाज्जम ठाज्जामो, ठाज्जामु, ठाज्जाम (3/178, 3/144)
मध्यमपुरुष	ठासि (3/140), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जसि, ठाज्जसे ठाज्जासि, ठाज्जासे (3/178, 3/140)	ठाह, ठाइत्था, ठाध (3/143, 4/268) ठाज्ज, ठाज्जा (3/177) ठाज्जह, ठाज्जइत्था, ठाज्जध, ठाज्जाह, ठाज्जाइत्था, ठाज्जाध (3/178, 3/143, 4/268)
अन्यपुरुष	ठाइ, ठादि (3/139,4/273), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जइ, ठाज्जए ठाज्जाइ,ठाज्जाए (3/178,3/139)	ठन्ति, ठन्ते, ठाइरे (3/142,1/84), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जन्ति, ठाज्जन्ते, ठाज्जइरे, ठाज्जान्ति, ठाज्जान्ते, ठाज्जाइरे (3/178, 3/142)

नोट– सूत्र 1/84 के अनुसार संयुक्ताक्षर से पूर्व दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। ठाज्ज → ठज्ज, ठाज्जा → ठज्जा। इसी प्रकार अन्य रूप बना लेने चाहिए। इसके अतिरिक्त आकारान्त, ओकारान्त धातुओं को बिना ह्रस्व किये अर्थात् 'अ' विकरण लगाकर भी रूप बनाये जा सकते हैं। जैसे–ठाअज्ज (देखें सूत्र – 4/240)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकाल
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मि (3/141), ज्ज, ज्जा, (3/177), ज्जमि, ज्जामि (3/178)	मो, मु, म (3/144), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जमो, ज्जमु, ज्जम, ज्जामो, ज्जामु, ज्जाम (3/178)
मध्यमपुरुष	सि (3/140), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जसि, ज्जसे ज्जासि, ज्जासे (3/178)	ह, इत्था, ध (3/143, 4/268), ज्ज, ज्जा (3/177) ज्जह, ज्जइत्था, ज्जध, ज्जाह, ज्जाइत्था, ज्जाध, (3/178, 3/143, 4/268)
अन्यपुरुष	इ,दि (3/139, 4/273), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जइ, ज्जए ज्जाइ, ज्जाए (3/178, 3/139)	न्ति, न्ते, इरे (3/142), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जन्ति, ज्जन्ते, ज्जइरे, ज्जान्ति, ज्जान्ते, ज्जाइरे (3/178, 3/142)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधि एवं आज्ञा
अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसमु (3/173), हसेमु (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177,3/159) हसेज्जइ, हसेज्जाइ (3/165; 3/159)	हसमो (3/176), हसेमो (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177,3/159), हसेज्जइ, हसेज्जाइ (3/165,3/159)
मध्यमपुरुष	हससु (3/173), हसहि(3/174), हसेसु, हसेहि (3/158) हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हस (3/175), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177, 3/159) हसेज्जइ, हसेज्जाइ (3/165, 3/159)	हसह (3/176), हसेह (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा, (3/177, 3/159) हसेज्जइ, हसेज्जाइ (3/165, 3/159)
अन्यपुरुष	हसउ (3/173), हसेउ (3/158), हसेज्ज, हसेज्जा (3/177, 3/159) हसेज्जइ, हसेज्जाइ (3/165, 3/159)	हसन्तु (3/176), हसेन्तु (3/158) हसेज्ज, हसेज्जा (3/177,3/159) हसेज्जइ, हसेज्जाइ (3/165, 3/159)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधि एवं आज्ञा
अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मु (3/173,3/158), ज्ज, ज्जा (3/177,3/159), ज्जइ, ज्जाइ (3/165, 3/159),	मो (3/176, 3/158), ज्ज, ज्जा (3/177,3/159), ज्जइ, ज्जाइ (3/165, 3/159)
मध्यमपुरुष	सु,हि (3/173,3/174, 3/158), इज्जसु, इज्जहि, इज्जे, '0' (शून्य प्रत्यय) (3/175), ज्ज, ज्जा (3/177,3/159), ज्जइ, ज्जाइ (3/165, 3/159)	ह (3/176, 3/158), ज्ज, ज्जा, (3/177, 3/159) ज्जइ, ज्जाइ (3/165, 3/159)
अन्यपुरुष	उ (3/173, 3/158), ज्ज, ज्जा (3/177,3/159), ज्जइ, ज्जाइ (3/165, 3/159)	न्तु (3/176,3/158), ज्ज, ज्जा (3/177,3/159), ज्जइ, ज्जाइ (3/165, 3/159)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधि एवं आज्ञा
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (ठा, हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ठामु (3/173), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जमु, ठाज्जामु (3/178, 3/173), ठाज्जइ, ठाज्जाइ (3/165)	ठामो (3/176), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जमो, ठाज्जामो (3/178,3/176), ठाज्जइ, ठाज्जाइ (3/165)
मध्यमपुरुष	ठासु, ठाहि (3/173,3/174), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जसु, ठाज्जासु, ठाज्जहि, ठाज्जाहि (3/178,3/173,3/174), ठाज्जइ, ठाज्जाइ (3/165),	ठाह (3/176), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जह, ठाज्जाह (3/178,3/176) ठाज्जइ, ठाज्जाइ (3/165)
अन्यपुरुष	ठाउ (3/173), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जउ, ठाज्जाउ (3/178), ठाज्जइ, ठाज्जाइ (3/165)	ठान्तु→ ठन्तु (3/176), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जन्तु, ठाज्जान्तु (3/178), ठाज्जइ, ठाज्जाइ (3/165)

नोट– सूत्र 1/84 के अनुसार संयुक्ताक्षार से पूर्व दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। ठाज्जमु → ठज्जमु, ठाज्जामु → ठज्जामु। इसी प्रकार अन्य रूप बना लेने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधि एवं आज्ञा
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मु (3/173), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जमु, ज्जामु (3/178,3/173) ज्जइ, ज्जाइ (3/165)	मो (3/176), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जमो, ज्जामो (3/178,3/176 ज्जइ, ज्जाइ (3/165)
मध्यमपुरुष	सु, हि (3/173,3/174), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जसु, ज्जासु, ज्जहि, ज्जाहि (3/178,3/173,3/174). ज्जइ, ज्जाइ (3/165)	ह (3/176), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जह, ज्जाह (3/178,3/176). ज्जइ, ज्जाइ (3/165)
अन्यपुरुष	उ (3/173), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जउ, ज्जाउ (3/178), ज्जइ, ज्जाइ (3/165)	न्तु (3/176), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जन्तु, ज्जान्तु (3/178), ज्जइ, ज्जाइ (3/165)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूतकाल
अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसीअ (3/163)	हसीअ (3/163)
मध्यमपुरुष	हसीअ (3/163)	हसीअ (3/163)
अन्यपुरुष	हसीअ (3/163)	हसीअ (3/163)

भूतकाल
अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ईअ (3/163)	ईअ (3/163)
मध्यमपुरुष	ईअ (3/163)	ईअ (3/163)
अन्यपुरुष	ईअ (3/163)	ईअ (3/163)

भूतकाल
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (ठा, हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ (3/162)	ठासी, ठाही, ठाहीअ (3/162)
मध्यमपुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ (3/162)	ठासी, ठाही, ठाहीअ (3/162)
अन्यपुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ (3/162)	ठासी, ठाही, ठाहीअ (3/162)

भूतकाल
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	सी, ही, हीअ (3/162)	सी, ही, हीअ (3/162)
मध्यमपुरुष	सी, ही, हीअ (3/162)	सी, ही, हीअ (3/162)
अन्यपुरुष	सी, ही, हीअ (3/162)	सी, ही, हीअ (3/162)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल

अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसिहिमि, हसिस्सामि, हसिहामि (3/166,3/167,3/141), हसेहिमि, हसेहामि, हसेस्सामि, (3/157), हसिस्सिमि (4/275) हसिस्सं, हसेस्सं (3/169,3/157)	हसिहिमो, हसिहिमु, हसिहिम, हसेहिमो, हसेहिमु, हसेहिम (3/166,3/157,3/144), हसिस्सामो, हसिस्सामु, हसिस्साम, हसेस्सामो, हसेस्सामु, हसेस्साम, हसिहामो, हसिहामु, हसिहाम, हसेहामो, हसेहामु, हसेहाम (3/167,3/157,3/144) हसिस्सिमो, हसिस्सिमु, हसिस्सिम (4/275), हसिहिस्सा, हसिहित्था, हसेहिस्सा, हसेहित्था (3/168, 3/157)
मध्यमपुरुष	हसिहिसि, हसिहिसे, हसेहिसि, हसेहिसे (3/166,3/157, 3/140), हसिस्सिसि, हसिस्सिसे (4/275)	हसिहिह, हसिहित्था, हसेहिह, हसेहित्था (3/166,3/157,3/143) हसिस्सिध, हसिस्सिइत्था, हसिस्सिह (4/275, 4/268)
अन्यपुरुष	हसिहिइ, हसिहिए,हसेहिइ, हसेहिए (3/166,3/157,3/139) हसिस्सिदि, हसिस्सिदे (4/275, 4/273)	हसिहिन्ति,हसिहिन्ते,हसिहिइरे, हसेहिन्ति, हसेहिन्ते, हसेहिइरे (3/166,3/157,3/142) हसिस्सिन्ति, हसिस्सिन्ते, हसिस्सिइरे (4/275)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल
अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हिमि, स्सामि, हामि (3/166,3/167, 3/157, 3/141), स्सिमि (4/275), स्सं (3/169, 3/157) (पूर्ण प्रत्यय)	हिमो,हिमु, हिम, स्सामो, स्सामु,स्साम, हामो, हामु, हाम (3/166,3/167, 3/157,3/144), स्सिमो, स्सिमु, स्सिम (4/275), हिस्सा, हित्था (3/168, 3/157) (पूर्ण प्रत्यय)
मध्यमपुरुष	हिसि, हिसे (3/166,3/157,3/140), स्सिसि, स्सिसे (4/275)	हिह, हित्था (3/166,3/157,3/143), स्सिध, स्सिइत्था, स्सिह (4/268,4/275)
अन्यपुरुष	हिइ, हिए (3/166,3/157,3/139), स्सिदि, स्सिदे (4/275,4/273)	हिन्ति, हिन्ते, हिइरे (3/166, 3/157, 3/142), स्सिन्ति, स्सिन्ते, स्सिइरे (4/275)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (ठा, हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ठाहिमि (3/166,3/141), ठास्सामि,ठाहामि (3/167,3/141), ठास्सिमि(4/275), ठास्सं (3/169), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जहिमि,ठाज्जाहिमि, ठाज्जस्सामि, ठाज्जास्सामि, ठाज्जहामि, ठाज्जाहामि, ठाज्जस्सिमि,ठाज्जास्सिमि (3/178)	ठाहिमो, ठाहिमु, ठाहिम (3/166, 3/144), ठास्सामो, ठास्सामु, ठास्साम, ठाहामो, ठाहामु, ठाहाम (3/167, 3/144) ठास्सिमो, ठास्सिमु, ठास्सिम (4/275), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जहिमो,ठाज्जहिमु, ठाज्जहिम, ठाज्जाहिमो,ठाज्जाहिमु ठाज्जाहिम, ठाज्जस्सामो, ठाज्जस्सामु ठाज्जस्साम, ठाज्जास्सामो, ठाज्जास्सामु, ठाज्जास्साम, ठाज्जहामो,ठाज्जहामु, ठाज्जहाम, ठाज्जाहामो,ठाज्जाहामु, ठाज्जाहाम, ठाज्जस्सिमो,ठाज्जस्सिमु, ठाज्जस्सिम, ठाज्जास्सिमो,ठाज्जास्सिमु, ठाज्जास्सिम (3/178), ठाहिस्सा, ठाहित्था (3/168)

नोट– सूत्र 1/84 के अनुसार संयुक्ताक्षार से पूर्व दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। ठाज्जहिमि → ठज्जहिमि। इसी प्रकार अन्य रूप बना लेने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यमपुरुष	ठाहिसि (3/177,3/140), ठारिस्ससि (4/275), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जहिसि, ठाज्जाहिसि, ठाज्जहिसे, ठाज्जाहिसे, (3/178), ठाज्जरिस्ससि, ठाज्जास्सिससि, ठाज्जरिस्ससे, ठाज्जास्सिससे (4/275)	ठाहिह, ठाहित्था (3/166,3/143), ठाहिध (3/166, 4/268), ठारिस्सिह, ठारिस्सिइत्था, ठारिस्सिध (4/275, 3/143,4/268) ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जहिह, ठाज्जाहिह, ठाज्जहित्था, ठाज्जाहित्था, ठाज्जस्सिध, ठाज्जास्सिध (3/178)
अन्यपुरुष	ठाहिइ (3/166,3/139), ठाहिदि (3/166,4/273), ठारिस्सिदि (4/275,4/273), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जहिइ, ठाज्जाहिइ, ठाज्जहिए, ठाज्जाहिए, ठाज्जरिस्सिदि, ठाज्जास्सिदि (3/178)	ठाहिन्ति, ठाहिन्ते, ठाहिरे या ठाहिइरे (3/166,3/142), ठारिस्सिन्ति, ठारिस्सिन्ते, ठारिस्सिइरे (4/275, 3/142), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ठाज्जहिन्ति, ठाज्जाहिन्ति, ठाज्जहिन्ते, ठाज्जाहिन्ते, ठाज्जहिइरे, ठाज्जाहिइरे, ठाज्जस्सिन्ति, ठाज्जास्सिन्ति, ठाज्जस्सिन्ते, ठाज्जास्सिन्ते, ठाज्जस्सिइरे, ठाज्जास्सिइरे (3/178)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल

आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हिमि,स्सामि, हामि (3/166,3/167,3/141), स्सिमि (4/275), स्सं (3/169), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जहिमि, ज्जाहिमि, ज्जस्सामि, ज्जास्सामि, ज्जहामि, ज्जाहामि, ज्जस्सिमि, ज्जास्सिमि (3/178)	हिमो, हिमु, हिम (3/166,3/144), स्सामो, स्सामु, स्साम, हामो, हामु, हाम (3/167, 3/144), स्सिमो, स्सिमु, स्सिम (4/275), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जहिमो, ज्जाहिमो, ज्जहिमु, ज्जाहिमु, ज्जहिम,ज्जाहिंम, ज्जस्सामो, ज्जास्सामो, ज्जस्सामु, ज्जास्सामु, ज्जस्साम, ज्जास्साम, ज्जहामो, ज्जाहामो, ज्जहामु, ज्जाहामु, ज्जहाम, ज्जाहाम, ज्जस्सिमो, ज्जास्सिमो, ज्जस्सिमु, ज्जास्सिमु, ज्जस्सिम, ज्जास्सिम (3/178) हिस्सा, हित्था (3/168)
मध्यमपुरुष	हिसि (3/177, 3/140), स्सिसि (4/275), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जहिसि, ज्जाहिसि (3/178), ज्जस्सिसि, ज्जास्सिसि, ज्जस्सिसे, ज्जास्सिसे (4/275)	हिह, हित्था (3/166, 3/143), हिध (3/166, 4/268) स्सिह, स्सिइत्था, स्सिध (4/275,3/143,4/268) ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जहिह, ज्जाहिह, ज्जहित्था,ज्जाहित्था,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		ज्जस्सिध, ज्जास्सिध (3/178)
अन्यपुरुष	हिइ (3/166, 3/139), हिदि (3/166,4/273), स्सिदि (4/275, 4/273), ज्ज, ज्जा (3/177), ज्जहिइ, ज्जाहिइ, ज्जहिए, ज्जाहिए ज्जस्सिदि, ज्जास्सिदि (3/178)	हिन्ति, हिन्ते, हिरे या हिइरे (3/166,3/142), स्सिन्ति, स्सिन्ते, स्सिइरे (4/275,3/142), ठाज्ज, ठाज्जा (3/177), ज्जहिन्ति, ज्जाहिन्ति, ज्जहिन्ते, ज्जाहिन्ते ज्जहिइरे, ज्जाहिइरे, ज्जस्सिन्ति, ज्जास्सिन्ति, ज्जस्सिन्ते,ज्जास्सिन्ते, ज्जस्सिइरे, ज्जास्सिइरे (3/178)

क्रियातिपत्ति
अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त क्रिया

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसेज्ज,हसेज्जा (3/179,3/159) हसन्त, हसमाण (3/180)	हसेज्ज, हसेज्जा (3/179,3/159) हसन्त, हसमाण (3/180)
मध्यमपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा (3/179,3/159) हसन्त, हसमाण (3/180)	हसेज्ज, हसेज्जा (3/179,3/159) हसन्त, हसमाण (3/180)
अन्यपुरुष	हसेज्ज, हसेज्जा (3/179,3/159) हसन्त, हसमाण (3/180)	हसेज्ज, हसेज्जा (3/179,3/159) हसन्त, हसमाण (3/180)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्रियातिपत्ति

अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ज्ज, ज्जा (3/179, 3/159) न्त, माण (3/180)	ज्ज, ज्जा (3/179, 3/159) न्त, माण (3/180)
मध्यमपुरुष	ज्ज, ज्जा (3/179, 3/159) न्त, माण (3/180)	ज्ज, ज्जा (3/179, 3/159) न्त, माण (3/180
अन्यपुरुष	ज्ज, ज्जा (3/179, 3/159) न्त, माण (3/180)	ज्ज, ज्जा (3/179, 3/159) न्त, माण (3/180)

अपभ्रंश के क्रियारूप

वर्तमानकाल

अकारान्त क्रिया– (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसउं (4/385), हसमि, हसामि, हसेमि (3/141, 3/154, 3/158)	हसहुं (4/386), हसमो, हसमु, हसम (3/144)
मध्यमपुरुष	हसहि (4/383), हससि, हससे (3/140)	हसहु (4/384), हसह, हसित्था (3/143)
अन्यपुरुष	हसइ, हसए (3/139), हसेइ (3/158)	हसहिं (4/382) हसन्ति, हसन्ते, हसिरे (3/142)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकाल
अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	उं (4/385),	हुं (4/386),
	मि (3/141, 3/154,/3/158)	मो, मु, म (3/144)
मध्यमपुरुष	हि (4/384),	हु (4/384),
	सि, से (3/140),	ह, इत्था (3/143)
अन्यपुरुष	इ, ए (3/139, 3/158)	हिं (4/382),
		न्ति, न्ते, इरे (3/142)

वर्तमानकाल
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (ठा, हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ठाउं (4/385),	ठाहुं (4/386),
	ठामि (3/141)	ठामो, ठामु, ठाम (3/144)
मध्यमपुरुष	ठाहि (4/384),	ठाहु (4/384),
	ठासि (3/140)	ठाह, ठाइत्था (3/143)
अन्यपुरुष	ठाइ (3/139)	ठाहिं (4/382)
		ठान्ति→ठन्ति,ठान्ते→ठन्ते,
		ठाइरे (3/142)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकाल
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	उं (4/385),	हुं (4/386),
	मि (3/141)	मो, मु, म (3/144)
मध्यमपुरुष	हि (4/384),	हु (4/384), ह, इत्था (3/143)
	सि (3/140)	
अन्यपुरुष	इ (3/139)	हिं (4/382), न्ति, न्ते, इरे (3/142)

विधि एवं आज्ञा
अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसमु (3/173),	हसमो (3/176),
	हसेमु (3/158)	हसेमो (3/158)
मध्यमपुरुष	हसि, हसु, हसे (4/387),	हसह (3/176), हसेह (3/158)
	हसहि,हससु, हस (3/173–174)	
अन्यपुरुष	हसउ (3/173),	हसन्तु (3/176),
	हसेउ (3/158)	हसेन्तु (3/158)

विधि एवं आज्ञा
अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मु (3/173)	मो (3/176, 3/158)
मध्यमपुरुष	इ, उ, ए (4/387),	ह (3/176, 3/158)
	हि, सु, 'शून्य' (3/173–174)	
अन्यपुरुष	उ (3/173, 3/158)	न्तु (3/176, 3/158)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विधि एवं आज्ञा
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (ठा, हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ठामु (3/173)	ठामो (3/176)
मध्यमपुरुष	ठाइ, ठाए, ठाउ (4/387), ठाहि, ठासु (3/173–174)	ठाह (3/176)
अन्यपुरुष	ठाउ (3/173)	ठान्तु → ठन्तु (3/176).

विधि एवं आज्ञा
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मु (3/173)	मो (3/176)
मध्यमपुरुष	इ, ए, उ (4/387), हि,सु (3/173–174)	ह (3/176)
अन्यपुरुष	उ (3/173)	न्तु (3/176)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल
अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हसिसउं, हसेसउं (4/388), हसिहिमि, हसेहिमि (3/157)	हसिसहुं, हसेसहुं (4/388), हसिहिमो, हसिहिमु, हसिहिम, हसेहिमो, हसेहिमु, हसेहिम (3/157)
मध्यमपुरुष	हसिसहि, हसेसहि (4/388), हसिहिसि, हसिहिसे, हसेहिसि, हसेहिसे (3/157)	हसिसहु, हसेसहु (3/388), हसिहिह, हसिहित्था, हसेहिह , हसेहित्था, (3/157)
अन्यपुरुष	हसिसइ, हसेसइ, हसिसए, हसेसए (4/388), हसिहिइ, हसिहिए, हसेहिइ, हसेहिए (3/157)	हसिसहिं, हसेसहिं (4/388), हसिहिन्ति, हसिहिन्ते, हसिहिइरे, हसेहिन्ति, हसेहिन्ते, हसेहिइरे (3/157)

भविष्यत्काल
अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	सउं (4/388), हिमि (3/157)	सहुं (4/388), हिमो, हिमु, हिम (3/157)
मध्यमपुरुष	सहि (4/388), हिसि, हिसे (3/157)	सहु (4/388), हिह, हित्था (3/157)
अन्यपुरुष	सइ, सए (4/388) हिइ, हिए (3/157)	सहिं (4/388), हिन्ति, हिन्ते, हिइरे (3/157)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल
आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (ठा, हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	ठासउं, ठासमि (4/388, 4/385), ठाहिउं, ठाहिमि (3/166, 4/385, 3/141)	ठासहुं, ठासमो, ठासमु, ठासम (4/388, 4/386, 3/144) ठाहिहुं, ठाहिमो, ठाहिमु, ठाहिम (3/166, 4/386, 3/144)
मध्यमपुरुष	ठासहि, ठाससि (4/388, 4/384, 3/140), ठाहिहि, ठाहिसि (3/166, 4/384, 3/140)	ठासहु, ठासह, ठासइत्था (4/388, 4/384, 3/143) ठाहिहु, ठाहिह, ठाहित्था (3/166, 4/384, 3/143)
अन्यपुरुष	ठासइ (4/388), ठाहिइ (3/166, 3/139)	ठासहिं, ठासन्ति, ठासन्ते, ठासइरे (4/388, 4/382, 3/142), ठाहिहिं, ठाहिन्ति, ठाहिन्ते, ठाहिइरे (3/166, 4/382, 3/142)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल
आकारान्त,ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	सउं, समि (4/388, 4/385), हिउं, हिमि (3/166, 4/385, 3/141)	सहुं, समो, समु, सम (4/388, 4/386, 3/144), हिहुं, हिमो, हिमु, हिम (3/166, 4/385, 3/144),
मध्यमपुरुष	सहि, ससि (4/388, 4/385, 3/140), हिहि, हिसि (3/166, 4/384, 3/140)	सहु, सह, सइत्था (4/388, 4/384, 3/143), हिहु, हिह, हित्था (3/166, 4/384, 3/143)
अन्यपुरुष	सइ (4/388), हिइ (3/166, 3/139)	सहिं, सन्ति, सन्ते, सइरे (4/388, 4/382, 3/142) हिहिं, हिन्ति, हिन्ते, हिइरे (3/166, 4/382, 3/142)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट – 1

सूत्रों में प्रयुक्त सन्धि–नियम

स्वर सन्धि

1. यदि इ, उ, ऋ के बाद भिन्न स्वर अ, आ, ए आदि आवे तो इ के स्थान पर य्, उ के स्थान पर व् और ऋ के स्थान पर र् हो जाता है–

ति + आदीनाम् = त्यादीनाम् (सूत्र – 3/139)

बहुषु + आद्यस्य = बहुष्वाद्यस्य (सूत्र – 3/142)

इज्जसु + इज्जहि = इज्जसिवज्जहि (सूत्र –3/175)

गुरु + आदेः = गुर्वादेः (सूत्र –3/150)

शतृ + आनशः = शत्रानशः (सूत्र –3/181)

2. यदि अ, आ के बाद इ आवे तो दोनों के स्थान पर ए और बाद में ए आवे तो दोनों के स्थान पर ऐ हो जाता है–

आद्यस्य + इच् = आद्यस्येच् (सूत्र –3/139)

मध्यमस्य + इत्था = मध्यमस्येत्था (सूत्र – 3/143)

एव + एच् = एवैच् (सूत्र – 3/145)

3. यदि अ, आ के बाद अ या आ आवे तो दोनों के स्थान पर आ और इ, ई के बाद इ, ई आवे तो दोनों के स्थान पर ई हो जाता है–

आव + आवे = आवावे (सूत्र – 3/149)

इज्जहि + इज्जे = इज्जहीज्जे (सूत्र – 3/175)

सिना+अस्तेः = सिनास्तेः (सूत्र – 3/146)

तेन + अस्तेः = तेनास्तेः (सूत्र –3/164)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

व्यंजन सन्धि

4. यदि त् के आगे आ, ई, ए आदि हो तो त् के स्थान पर द् और क् के आगे आ आवे तो क् के स्थान पर ग् हो जाता है–

णेरत् + एत् = णेरदेत् (सूत्र –3/149)

णेरदेत् + आव = णेरदेदाव (सूत्र –3/149)

व्यञ्जनात् + ईअ = व्यञ्जनादीअ (सूत्र –3/163)

लुक् + आवी = लुगावी (सूत्र –3/152)

5. यदि त् के आगे च् हो तो पूर्ववाला त् भी च् हो जाता है–

इत् + च = इच्च (सूत्र –3/155)

एत् + च = एच्च (सूत्र –3/157)

6. पदान्त म् के आगे कोई व्यञ्जन हो तो म का अनुस्वार (ं) हो जाता है–

मानाम् + हिस्सा = मानां हिस्सा (सूत्र –3/168)

7. यदि त वर्ग के बाद ल आवे तो त् भी ल् हो जाता है–

अदेत् + लुकि = अदेल्लुकि (सूत्र –3/153)

8. पद के अन्तिम न् को स् होता है और न् के स् होने पर उससे पहले 'ं' लग जाता है–

एकस्मिन् + त्रयाणाम् = एकस्मिंस्त्रयाणाम् (सूत्र –3/173)

विसर्ग सन्धि

9. यदि विसर्ग से पहले अ या आ के अतिरिक्त इ, ए, ओ आदि स्वर हों और विसर्ग के बाद अ आदि स्वर अथवा म्, व्, ह् आदि व्यंजन हों तो विसर्ग का र् हो जाता है–

णेः + अत् = णेरत् (सूत्र –3/149)

भ्रमेः + आडः = भ्रमेराडः (सूत्र –3/151)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैः + म्हि = मै म्हि (सूत्र –3/147)

अविः + वा = अविर्वा (सूत्र –3/150)

सोः + हि = सोर्हि (सूत्र –3/174)

अस्तेः + आसि = अस्तेरासि (सूत्र –3/164)

गमेः + एप्पिणु = गमेरेप्पिणु (सूत्र –4/442)

10. यदि विसर्ग से पहले अ या आ और बाद में कोई स्वर अथवा व्, भ्, म्, ज् आदि हों तो विसर्ग का लोप हो जाता है–

अतः + एवैच् = अत एवैच् (सूत्र – 3/145)

म्हाः + वा = म्हा वा (सूत्र – 3/147)

सप्तम्याः + ई = सप्तम्या ई (सूत्र – 3/165)

हीअः + भूतार्थस्य = हीअ भूतार्थस्य (सूत्र–3/162)

हः + मो = ह मो (सूत्र–3/176)

ज्जः + ज्जा = ज्ज ज्जा (सूत्र–3/177)

11. यदि विसर्ग से पहले अ हो और विसर्ग के बाद व्, द् आदि हों तो अ और विसर्ग मिलकर ओ हो जाता है–

आडः + वा = आडो वा (सूत्र – 3/151)

अतः + देश्च = अतो देश्च (सूत्र – 3/274)

12. यदि विसर्ग के बाद त् हो तो विसर्ग के स्थान पर स् और च् हो तो श् हो जाता है–

क्त्वः + तुम् = क्त्वस्तुम् (सूत्र – 2/146) (क्रम संख्या – 41)

अत्थिः + ति = अत्थिस्ति (सूत्र – 3/148)

भविष्यन्त्योः + च = भविष्यन्त्योश्च (सूत्र – 3/177)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूत्रों का व्याकरणिक विश्लेषण

क्र. सं.	सूत्र सं.	सूत्र	सन्धि–नियम	सूत्र–शब्द	मूलशब्द, विभक्ति	शब्दानुसरण
1.	3/139	**त्यादीनामाद्यत्रयस्याद्यस्येचेचौ** {(ति)+(आदीनाम्) + (आद्यत्रयस्य) + (आद्यस्य) + (इच्) + (एचौ)}	1,2	ति	ति	
				आदीनाम्	(आदि) 6/3	हरि
				आद्यत्रयस्य	(आद्य त्रय) 6/1	राम
				आद्यस्य	(आद्य) 6/1	राम
				इच्	(इच्)	
				एचौ	(एच्) 1/2	भूभृत्
2.	3/140	**द्वितीयस्य सि से**		द्वितीयस्य	(द्वितीय) 6/1	राम
				सि	(सि) 1/1	परम्परानुसरण
				से	(से) 1/1	परम्परानुसरण
3.	3/141	**तृतीयस्य मिः**		तृतीयस्य	(तृतीय) 6/1	राम
				मिः	(मि) 1/1	हरि
4.	3/142	**बहुष्वाद्यस्य न्ति न्ते इरे** {(बहुषु) + (आद्यस्य)}	1	बहुषु	(बहु) 7/3	गुरु
				आद्यस्य	(आद्य) 6/1	राम
				न्ति	(न्ति) 1/1	परम्परानुसरण
				न्ते	(न्ते) 1/1	परम्परानुसरण
				इरे	(इरे) 1/1	परम्परानुसरण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

5. 3/143	मध्यमस्येत्था–हचौ {(मध्यमस्य) + (इत्था)}	2	मध्यमस्य इत्था हचौ	(मध्यम) 6/1 (इत्था) (हच्) 1/2	राम भूभृत्
6. 3/144	तृतीयस्य मो–मु–माः		तृतीयस्य मो मु माः	(तृतीय) 6/1 (मो) (मु) (म) 1/3	राम राम
7. 3/145	अत एवैच् से {(अतः) + (एव) + (एच्)}	10,2	अतः एव एच् से	(अत्) 5/1 (एव) (एच्) 1/1 (से) 1/1	भूभृत् भूभृत् परम्परानुसरण
8. 3/146	सिनास्तेः सिः {(सिना) + (अस्तेः)}	3	सिना अस्तेः सिः	(सि) 3/1 (अस्ति) 6/1 (सि) 1/1	हरि हरि हरि
9. 3/147	मि–मो–मै–म्हि–म्हो–म्हा वा {(मैः) + (म्हि)} {(म्हाः) + (वा)}	9,10	मि मो मैः	(मि) (मो) (म) 3/3	 राम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

			म्हि	(म्हि)	
			म्हो	(म्हो)	
			म्हाः	(म्ह) 1/3	राम
			वा	(वा)	
10. 3/148	**अत्थिस्त्यादिना** {(अत्थिः) + (ति) + (आदिना)}	12,1	अत्थिः	(अत्थि) 1/1	हरि
			ति	(ति)	
			आदिना	(आदि) 3/1	हरि
11. 3/149	**णेरदेदावावे** {(णेः) + (अत्) + (एत्) + (आव) + (आवे)}	9,4,3	णेः	(णि) 6/1	हरि
			अत्	(अत्)	
			एत्	(एत्)	
			आव	(आव)	
			आवे	(आवे) 1/1	परम्परानुसरण
12. 3/150	**गुर्वादेरविर्वा** {(गुरु) + (आदेः) + (अविः) + (वा)}	1,9	गुरु	(गुरु)	
			आदेः	(आदि) 6/1	हरि
			अविः	(अवि) 1/1	हरि
			वा	(वा)	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

13. 3/151	**भ्रमे राडो वा** {(भ्रमेः) + (आडः) + (वा)}	9,11	भ्रमेः आडः वा	(भ्रमि) 5/1 (आड) 1/1 (वा)	मति राम
14. 3/152	**लुगावी–क्त–भाव–कर्मसु** {(लुक्)+(आवी)}	4	लुक् आवी क्त भाव कर्मसु	(लुक्) (आवि) 1/2 (क्त) (भाव) (कर्म) 7/3	हरि कर्मन्
15. 3/153	**अदेल्लुक्यादेरत आः** {(अत्) + (एत्) + (लुक्ति) + (आदेः) + (अतः) + (आः)}	4,7,1,9,10	अत् एत् लुक्ति आदेः अतः आः	(अत्) (एत्) (लुक्) 7/1 (आदि) 6/1 (अत्) 6/1 (आ) 1/1	भूभृत् हरि भूभृत् गोपा
16. 3/154	**मौ वा**		मौ वा	(मि) 7/1 (वा)	हरि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

17. 3/155	इच्च मो–मु–मे वा {(इत्) + (च)}	5	इत् च मो मु मे वा	(इत्) 1/1 (च) (मो) (मु) (म) 7/1 (वा)	भूभृत् राम
18. 3/156	क्ते		क्ते	(क्त) 7/1	राम
19. 3/157	एच्च क्त्वा–तुम्–तव्य– भविष्यत्सु {(एत्) + (च)}	5	एत् च क्त्वा तुम् तव्य भविष्यत्सु	(एत्) 1/1 (च) (क्त्वा) (तुम्) (तव्य) (भविष्यत्) 7/3	भूभृत् भूभृत्
20. 3/158	वर्तमाना – पञ्चमी– शतृषु वा		वर्तमाना पञ्चमी शतृषु वा	(वर्तमाना) (पञ्चमी) (शतृ) 7/3 (वा)	 पितृ
21. 3/159	ज्जा – ज्जे		ज्जा ज्जे	(ज्जा) (ज्ज) 7/1	 राम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

22. 3/160	**ई अ – इज्जौ क्यस्य**		ईअ	(ईअ)	
			इज्जौ	(इज्ज) 1/2	राम
			क्यस्य	(क्य) 6/1	राम
23. 3/162	**सी ही हीअ भूतार्थस्य**	10	सी	(सी) 1/1	नदी
	{(हीअः) + (भूतार्थस्य)}		ही	(ही) 1/1	नदी
			हीअः	(हीअ) 1/1	राम
			भूतार्थस्य	(भूतार्थ) 6/1	राम
24. 3/162	**व्यञ्जनादीअः**	4	व्यञ्जनात्	(व्यञ्जन) 5/1	राम
	{(व्यञ्जनात्) + (ईअः)		ईअः	(ईअ) 1/1	राम
25. 3/164	**तेनास्तेरास्यहेसी**	3,9,1	तेन	(त) 3/1	राम
	{(तेन) + (अस्तेः) + (आसि) + (अहेसी)}		अस्तेः	(अस्ति) 6/1	हरि
			आसि	(आसि) 1/1	वारि
			अहेसी	(अहेसी) 1/1	नदी
26. 3/165	**ज्जात्सप्तम्या इ र्वा**	10,9	ज्जात्	(ज्ज) 5/1	राम
	{(ज्जात्) – (सप्तम्याः) + (इः) + (वा)}		सप्तम्याः	(सप्तमी) 5/1	स्त्री
			इः	(इ) 1/1	हरि
			वा	(वा)	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

27. 3/166	भविष्यति हिरादिः {(हिः) + (आदिः)}	9	भविष्यति हिः आदिः	(भविष्यत्) 7/1 (हि) 1/1 (आदि) 1/1	भूभृत् हरि हरि
28. 3/167	मि–मो–मु–मे–स्सा हा न वा		मि मो मु मे स्सा हा न वा	(मि) (मो) (मु) (म) 7/1 (स्सा) 1/1 (हा) 1/1 (न) (वा)	 राम लता लता
29. 3/168	मो–मु–मानां हिस्सा हित्था {(मानाम्) + (हिस्सा)}	6	मो मु मानाम् हिस्सा हित्था	(मो) (मु) (म) 6/3 (हिस्सा) 1/1 (हित्था) 1/1	 राम लता लता
30. 3/169	मेः स्सं		मेः स्सं	(मि) 6/1 (स्सं) 1/1	हरि परम्परानुसरण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

31. 3/173	**दु सु मु विध्यादिष्वेकस्मिंस्त्रयाणाम्** {(विधि) + (आदिषु) + (एकस्मिन्) + (त्रयाणाम्)}	1,8	दु सु मु विधि आदिषु एकस्मिन् त्रयाणाम्	(दु) 1/1 (सु) 1/1 (मु) 1/1 (विधि) (आदि) 7/3 (एक) 7/1 (त्रय) 6/3	परम्परानुसरण परम्परानुसरण परम्परानुसरण हरि एक राम
32. 3/174	**सोर्हिर्वा** {(सोः)+ (हिः) +(वा) }	9	सोः हिः वा	(सु) 6/1 (हि) 1/1 (वा)	गुरु हरि
33. 3/175	**अत इज्जस्विज्जहीज्जे–लुको वा** {(अतः) + (इज्जसु) + (इज्जहि) +(इज्जे) – (लुकः) + (वा)}	10,1,3,11	अतः इज्जसु इज्जहि इज्जे लुकः वा	(अत्) 5/1 (इज्जसु) (इज्जहि) (इज्जे) (लुक्) 1/3 (वा)	भूभृत् भूभृत्
34. 3/176	**बहुषु न्तु ह मो** {(हः) + (मो)}	10	बहुषु न्तु हः मो	(बहु) 7/3 (न्तु) 1/1 (ह) 1/1 (मो) 1/1	गुरु परम्परानुसरण राम परम्परानुसरण

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

35. 3/177	**वर्तमाना–भविष्यन्त्योश्च ज्ज ज्जा वा**	12,10	वर्तमाना	(वर्तमाना)	
	{(भविष्यन्त्योः)+(च)} {(ज्जः) + (ज्जा)}		भविष्यन्त्योः	(भविष्यन्ति) 7/2	हरि
			च	च	
			ज्जः	(ज्ज) 1/1	राम
			ज्जा	(ज्जा) 1/1	लता
			वा	(वा)	
36. 3/178	**मध्ये च स्वरान्ताद्वा**	4	मध्ये	(मध्य) 7/1	राम
	{(स्वरान्तात्) + (वा)}		च	(च)	
			स्वरान्तात्	(स्वरान्त) 5/1	राम
			वा	(वा)	
37 3/179	**क्रियातिपत्तेः**		क्रियातिपत्तेः	(क्रियातिपत्ति) 6/1	हरि
38. 3/180	**न्त – माणौ**		न्त	(न्त)	
			माणौ	(माण) 1/2	राम
39. 3/181	**शत्रानशः**	1	शतृ	(शतृ)	
	{(शतृ) + (आनशः)}.		आनशः	(आनश) 6/1	भूभृत्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

40. 3/182	ई च स्त्रियाम्		ई	(ई) 1/1	नदी
			च	(च)	
			स्त्रियाम्	(स्त्री) 7/1	स्त्री
41. 2/146	क्त्वस्तुमत्तूण – तुआणाः	12	क्त्वः	(क्त्वा) 6/1	गोपा
	{(क्त्वः) + (तुम्) + (अत्) + (तूण)}		तुम्	(तुम्)	
			अत्	(अत्)	
			तूण	(तूण)	
			तुआणाः	(तुआण) 1/3	राम

शौरसेनी प्राकृत के क्रिया–कृदन्त सूत्र

42. 4/268	इह–हचोर्हस्य	9	इह	(इह)	
	{(हचोः) + (हस्य)}		हचोः	(हच्) 6/2	भूभृत्
			हस्य	(ह) 6/1	राम
43. 4/271	क्त्व इय–दूणौ	10	क्त्वः	(क्त्वा) 6/1	गोपा
	{(क्त्वः) + (इय)}		इय	(इय)	
			दूणौ	(दूण) 1/2	राम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

44. 4/273	**दिरिचेचोः** {(दिः) + (इच्) + (एचोः) }	9	दिः इच् एचोः	(दि) 1/1 (इच्) (एच्) 6/2	हरि भूभृत्
45. 4/274	**अतो देश्च** {(अतः) + (देः) + (च)}	11, 12	अतः देः च	(अत्) 5/1 (दे) 1/1 (च)	भूभृत् परम्परानुसरण
46. 4/275	**भविष्यति स्सिः**		भविष्यति स्सिः	(भविष्यत्) 7/1 (स्सि) 1/1	भूभृत् हरि

अपभ्रंश के क्रिया–कृदन्त सूत्र

47. 4/382	**त्यादेराद्य–त्रयस्य बहुत्वे हिं न वा** {(ति) + (आदेः) + (आद्य)}	1,9	ति आदेः आद्य त्रयस्य बहुत्वे हिं न वा	(ति) (आदि) 6/1 (आद्य) (त्रय) 6/1 (बहुत्व) 7/1 (हिं) 1/1 न वा	 हरि राम राम परम्परानुसरण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

48. 4/383	मध्य–त्रयस्याद्यस्य हिः {(त्रयस्य) + (आद्यस्य)}	3	मध्य	मध्य	
			त्रयस्य	(त्रय) 6/1	राम
			आद्यस्य	(आद्य) 6/1	राम
			हिः	(हि) 1/1	हरि
49. 4/384	बहुत्वे हुः		बहुत्वे	(बहुत्व) 7/1	राम
			हुः	(हु) 1/1	गुरु
50. 4/385	अन्त्य–त्रयस्याद्यस्य उं {(त्रयस्य) + (आद्यस्य)}	3	अन्त्य	(अन्त्य)	
			त्रयस्य	(त्रय) 6/1	राम
			आद्यस्य	(आद्य) 6/1	राम
			उं	(उं) 1/1	परम्परानुसरण
51. 4/386	बहुत्वे हुं		बहुत्वे	(बहुत्व) 7/1	राम
			हुं	(हुं) 1/1	परम्परानुसरण
52. 4/387	हि– स्वयोरिदुदेत् {(स्वयोः) + (इत्) + (उत्) + (एत्)}	9,4	हि	(हि)	
			स्वयोः	(स्व) 6/2	राम
			इत्	(इत्) 1/1	भूभृत्
			उत्	(उत्) 1/1	भूभृत्
			एत्	(एत्) 1/1	भूभृत्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

53. 4/388 **वत्सर्यति–स्यस्य सः**		वत्सर्यति	(वत्सर्यत्) 7/1	भूभृत्
		स्यस्य	(स्य) 6/1	राम
		सः	(स) 1/1	राम
54. 4/438 **तव्यस्य इएव्वउं एव्वउं एवा**		तव्यस्य	(तव्य) 6/1	राम
		इएव्वउं	(इएव्वउं) 1/1	परम्परानुसरण
		एव्वउं	(एव्वउं) 1/1	परम्परानुसरण
		एवा	(एवा) 1/1	परम्परानुसरण
55. 4/439 **क्त्व इ–इउ–इवि–अवयः** {(क्त्वः) + (इ)}	10	क्त्वः	(क्त्वा) 6/1	गोपा
		इ	(इ)	
		इउ	(इउ)	
		इवि	(इवि)	
		अवयः	(अवि) 1/3	हरि
56. 4/440 **एप्प्येप्पिण्वेव्येविणवः** {(एप्पि) + (एप्पिणु) + (एवि) + (एविणवः)}	1	एप्पि	(एप्पि)	
		एप्पिणु	(एप्पिणु)	
		एवि	(एवि)	
		एविणवः	(एविणु) 1/3	गुरु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

57. 4/441	**तुम एवमणाणहमणहिं च** {(तुमः) + (एवम्) + (अण) +(अणहम्) + (अणहिं)}	10,3	तुमः एवम् अण अणहम् अणहिं च	(तुम्) 6/1 (एवम्) 1/1 (अण) 1/1 (अणहम्) 1/1 (अणहिं) 1/1 (च)	भूभृत् परम्परानुसरण परम्परानुसरण परम्परानुसरण परम्परानुसरण
58. 4/442	**गमेरेप्पिण्वेप्प्योरेर्लुग् वा** {(गमेः) + (एप्पिणु) + (एप्प्योः) + (एः) + (लुक्) + (वा)}	9,1,4	गमेः एप्पिणु एप्पयोः एः लुक् वा	(गमि) 5/1 (एप्पिणु) (एप्पि) 7/2 (ए) 6/1 (लुक्) 1/1 (वा)	हरि हरि परम्परानुसरण भूभृत्
59.	**स्वरादनतो वा** {(स्वरात्) + (अन्) + (अतः) + (वा)}	4,11	स्वरात् अन् अतः वा	(स्वर) 5/1 (अन्) (अत्) 5/1 (वा)	राम भूभृत्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहायक पुस्तकें एवं कोश

1. हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण, भाग 1–2 : व्याख्याता–श्री प्यारचन्द जी महाराज (श्री जैन दिवाकर–दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी बाजार, ब्यावर) ।

2. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण : डॉ. आर. पिशल (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना)।

3. अभिनव प्राकृत व्याकरण : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री (तारा पब्लिकेशन, वाराणसी)।

4. प्राकृत मार्गोपदेशिका : पं. बेचरदास जीवराज दोशी (मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली)।

5. प्रौढ रचनानुवाद कौमुदी : डॉ.कपिलदेव द्विवेदी (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)।

6. पाइअ–सद्द–महण्णवो : पं. हरगोविन्ददास विक्रमचन्द सेठ (प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी)।

7. अप्रभ्रंश–हिन्दी कोश, भाग 1–2 : डॉ. नरेशकुमार (इण्डो–विजन प्रा. लि. II A 220, नेहरू नगर, गाजियाबाद)।

8. Apabhramsa of Hemacandra : Dr. Kantilal Baldevram Vyas (Prakrit Text Society, Ahmedabad)

9. Introduction to Ardha-Magadhi : A. M. Ghatage (School and College Book Stall, Kolhapur)

10. कातन्त्र व्याकरण : गणिनी आर्यिका ज्ञानमती (दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर, मेरठ)।

11. प्राकृत–प्रबोध : डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री (चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी–1)।

12. बृहद् अनुवाद–चन्द्रिका : चक्रधर नोटियाल 'हंस' (मोतीलाल बनवारीदास नारायण, फेज 1, दिल्ली)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org